ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

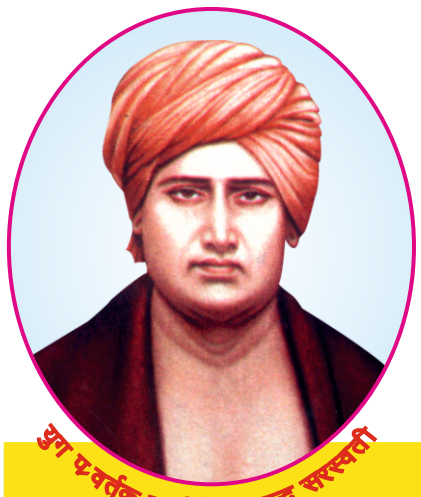

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 10 अंक 20 30 जुलाई से 5 अगस्त, 2015 दयानन्दाब्द 192 सृष्टि सम्वत् 1960853116 सम्वत् 2072 द्वि. आ. कृ. 14

प्रसिद्ध वैज्ञानिक तथा पूर्व राष्ट्रपति डॉ. कलाम नहीं रहे

शिलांग आईआईएम में लेक्चर देने के दौरान पूर्व राष्ट्रपति को पड़ा दिल का दौरा

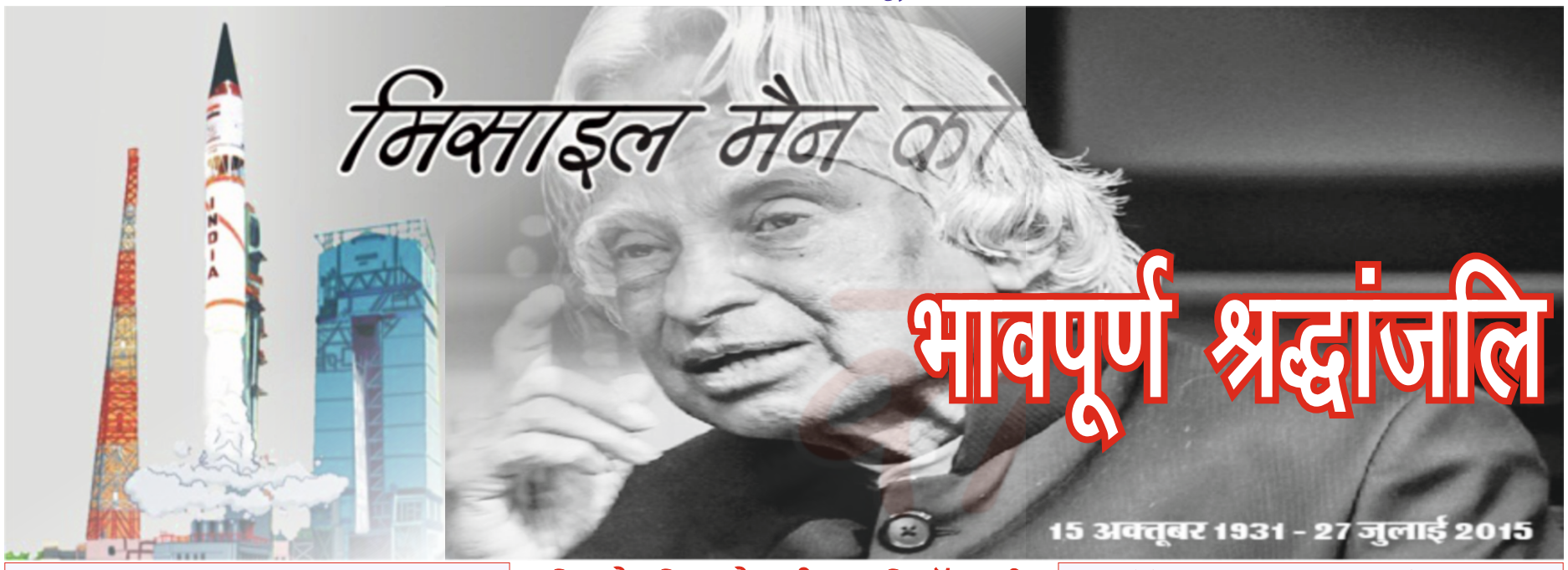

जीवनभर लोगों के राष्ट्रपति रहे

हमने भारत के एक महान सपूत को आज खो दिया, जिसने अपना पूरा जीवन देश और इसके नागरिकों के कल्याण के लिए समर्पित कर दिया। डा. कलाम जीवनभर लोगों के राष्ट्रपति रहे और अपनी मौत के बाद भी वह ऐसे ही रहेंगे।

– प्रणब मुखर्जी, राष्ट्रपति

प्रसिद्ध वैज्ञानिक और पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। 84 वर्षीय कलाम सोमवार को सायं 630 बजे आई.आई.एम. में लेक्चर दे रहे थे कि अचानक बेहोश होकर गिर पड़े उनको अविलम्ब अस्पताल ले जाया गया जहाँ उपचार के उपरान्त उनको मृत घोषित कर दिया गया।

मैंने एक मार्ग दर्शक खो दिया

कलाम महान वैज्ञानिक थे। मैंने एक मार्ग दर्शक खो दिया। वह पूरे देश खासकर युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत थे। वह राष्ट्रपति थे तब भी कहते थे, मैं एक टीचर हूं। और देखिए, वह अपने अंतिम समय में भी पढ़ा ही रहे थे।

– नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

वैज्ञानिक होने के साथ-साथ एक आध्यात्मिक पुरुष थे डॉ. कलाम

– स्वामी आर्यवेश

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने डॉ. कलाम को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्हें विज्ञान और अध्यात्म से जुड़ा एक ऐसा आदर्श इन्सान बताया जिसकी मिसाल विश्व इतिहास में मिलना मुश्किल है। दिमाग से वैज्ञानिक मगर दिल से पूर्ण आध्यात्मिक डॉ. कलाम बच्चों के द्वारा भविष्य के भारत को बनाने का लक्ष्य निर्धारित कर अपना अधिकांश समय स्कूलों, कॉलेजों में व्यतीत कर रहे थे। स्वामी जी ने कहा कि डॉ. कलाम वैज्ञानिक होते हुए भी एक अत्यन्त संस्कारी जीवन जीकर संसार से विदा हुए हैं। वे इन्सानियत पर भरोसा करते थे और सत्यता, शालीनता और स्पष्टता को कभी नजरंदाज नहीं करते थे। देश की सुरक्षा के लिए बेशक उन्होंने मिसाइलें बनाई लेकिन उन्होंने हमेशा आम आदमी की भलाई को सर्वोपरि रखा तथा उनके जीवन में खुशहाली लाने के लिए वे हमेशा चिन्तित रहते थे। पूरा जीवन शिक्षा को समर्पित करने वाले डॉ. कलाम को 1997 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान ''भारत रत्न'' से विभूषित किया गया था। देश के सर्वोच्च पद पर नियुक्त होने से पहले भारत रत्न पाने वाले डॉ. कलाम देश के तीसरे राष्ट्रपति बने। डॉ. कलाम को 1981 में पद्मभूषण और 1990 में पद्मविभूषण से भी सम्मानित किया गया। स्वामी जी ने कहा कि डॉ. कलाम भारत के सबसे ज्यादा लोकप्रिय राष्ट्रपति थे और इसकी वजह उनका सरल, उत्साही और विनम्र स्वभाव था वे युवाओं के लिए हमेशा एक मार्ग दर्शक की तरह कार्य करते रहे। उनका मानना था कि युवाओं और बच्चों को सही रास्ता दिखाकर उनको सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित कर वे देश को उन्नति के रास्ते पर ले जाने का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। मूल्यों और इन्सानियत को विज्ञान से जोड़ने वाले डॉ. कलाम आज भले ही हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनके विचारों के प्रकाश में भारत ने चलना सीख लिया है जब भी विकसित भारत की बात होगी सबसे पहले डॉ. कलाम को याद किया जायेगा।

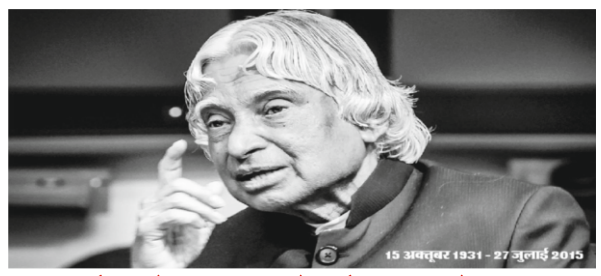

एक बैग लेकर आए थे और वही लेकर गए

राष्ट्रपति बनने के बाद कपड़ों से भरा एक बैग लेकर उन्होंने राष्ट्रपति भवन में प्रवेश किया। फिजूलखर्ची रोकने की पहल करते हुए उन्होंने राष्ट्रपति भवन के बाकी सभी कमरे बंद करवा दिये, कहा कि मुझे तो एक ही कमरे में सोना है। पद से विदा होने के बाद वह बस एक बैग लेकर ही राष्ट्रपति भवन से विदा हुए।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

क्या किसी विशेष कार्य के लिए यात्रा पर जाते समय 'दिशा-शूल' आदि का विचार करना चाहिए?

– डॉ. गंगाशरण आर्य

दिशा शूल की मान्यता बहुत लम्बे बाल से हिन्दुओं में प्रचलित है। लेकिन इसका क्या मन्तव्य है, कभी किसी हिन्दू भाई ने जानने का प्रयास ही नहीं किया? बस मन्दिरों में बैठे ब्राह्मण का वेश धरे धन-लोलुप पण्डे व पुजारियों ने कह दिया और इन्होंने मान लिया अर्थात् अन्धश्रद्धा पूर्वक कार्य करने लगे। हम यह विचार ही नहीं करते कि हमारा देश गुलाम ही अन्धविश्वास के कारण हुआ। गुलामी के भयावह काल के बाद हमारे देश को गरीबी का मुख देखना पड़ा था जिसके परिणाम स्वरूप हमारे कुछ पंडित भाई थोड़े से धन के लिए अपना ब्राह्मणत्व (वेद का पढ़ना-पढ़ाना, यज्ञ करना और कराना, वेद विद्या के लिए दान लेना और देना आदि) छोड़कर अपना अस्तित्व औचित्य सिद्ध करने के लिए, अपनी उदरपूर्ति हेतु (महर्षि व्यास जी के नाम से) अनेक कल्पित कहानियाँ पुराण आदि के रूप में गढ़ ली और लोगों का धन ऐंठने लगे। दिशा-शूल भी लोगों को भयभीत कर उनके द्वारा अपने से बांधने और धन लूटने का ही एक उपाय है और कुछ नहीं। आईये इसके विषय में विस्तार से जानने का प्रयास करते हैं।

दिशा-शूल दो शब्दों से मिलकर बना है – एक दिशा और दूसरा शूल। दिशा का अर्थ साफ है, पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण ये चार दिशायें होती हैं। शूल का अर्थ होता है कांटा। साधारण शब्दों में कहे तो दिशा-शूल का अर्थ हुआ जिस दिन जिस दिशा में यात्रा करने में हमारा अहित हो उस दिन को उस दिशा की यात्रा में दिशा-शूल कहते हैं। भारतवर्ष के गाँव तो क्या बहुतेरे शहरों में भी कुछ दिन दिशा-शूल के लिए नियत है जैसे बुधवार को कोई भी विवाहित स्त्री न तो अपने मायके से ससुराल जा सकती है और न ही ससुराल से मायके में जा सकती है। इसी प्रकार श्राद्ध के दिनों में भी स्त्रियाँ अपनी यात्रा दिशा-शूल के भय से वर्जित रखती हैं। क्योंकि अगर इन दिनों में उन्होंने यात्रा की तो कुछ न कुछ दुर्घटना या अनिष्ट उनके या उनके सगे-सम्बन्धियों के साथ अवश्य हो सकता है ऐसा उन्हें कह दिया जाता है और मन में पूर्वोक्त भय के कारण वे बेचारी अपनी यात्रा स्थगित कर देती हैं फिर चाहे वह अनपढ़ हो या पढ़ी-लिखी इसी प्रकार पुरुष वर्ग भी अपनी बहुत सी यात्राएँ सिर्फ दिशा-शूल के भय से रोक देता है और यदि उस दिशा का कार्य अति आवश्यक है जो किसी भी कारण से न टाला जा सके तो पण्डित जी से उस शूल के निवारण हेतु उपाय पूछने लगता है और अपने आपको विद्वान् कहने वाले धन-लोलुप पण्डे व पुजारी जिन्होंने ज्योतिष विद्या को ठीक से न जाना है न समझा है वे दिशा-शूल निवारण हेतु उपाय भी सुझाने लगते हैं क्योंकि उन्होंने कभी गणित ज्योतिष को पढ़ा ही नहीं है। वे गणित ज्योतिष से पूरी तरह अनभिज्ञ हैं। वे इस लूट के लिए अनेक फलित ज्योतिष के ग्रन्थों का सहारा लेते हैं जो निराधार है जैसे –

सुलभ ज्योतिष के अनुसार सोमवार, शनिवार को पूर्व दिशा की यात्रा वर्जित है। मंगलवार, बुधवार को उत्तर दिशा की एवं रविवार और शुक्रवार को पश्चिम दिशा की यात्रा तथा बृहस्पतिवार को दक्षिण दिशा की यात्रा वर्जित है। इसी प्रकार इन दिनों में विभिन्न उपाय भी दिशा-शूल के निवारण हेतु ये बताते हैं जैसे सोमवार को खीर मंगलवार को मट्ठा, बुधवार को गर्म घी, बृहस्पतिवार को दही, शुक्रवार को गर्म दूध और शनिवार को तिलान्न एवं रविवार को मलाई खाकर यात्रा करने से दिशा-शूल का दोष दूर हो जाता है। अब आइए जरा विचार करते हैं कि इनके इस दिशा-शूल और उसके निवारण के उपायों का क्या औचित्य है? इनकी क्या वास्तविकता है? उपरोक्त जानकारी के अनुसार सप्ताह के सातों दिनों में, प्रत्येक वार को किसी न किसी दिशा में यात्रा करना मना है। तो एक बात बताओ जिस दिन जिस दिशा में यात्रा करना मना है उस दिन उसी दिशा में बारात ले जाने का मुहूर्त अगर किसी का निकल आए तो क्या करेंगे? क्या बारात नहीं ले जायेंगे? इसी प्रकार उस दिन यदि उसी दिशा में किसी खास रिश्तेदार के यहाँ विवाहोत्सव अथवा मृत्यु हो जाने पर उनके सुख-दुःख में शामिल होने नहीं जाओगे? क्योंकि, मृत्यु अथवा विवाहोत्सव आदि तो सप्ताह के सातों दिनों में ही होते हैं और सप्ताह के सातों दिनों में यानि कि सोमवार हो या मंगलवार, बुधवार हो या वीरवार, शुक्रवार हो या शनिवार या फिर रविवार ही क्यों न हो प्रतिदिन किसी न किसी दिशा में यात्रा करने पर मनाही है तो क्या सारी दिशाएँ और सारे दिन दुर्घटना सूचक हैं? कहीं न कहीं की यात्रा तो बिना किसी अवरोध के इन पण्डों के द्वारा बताई जानी चाहिए थी। अब आप कहेंगे कि जिसके लिए जिस दिन दिशा-शूल की बाधा है उसे उस दिन उस दिशा में यात्रा न करने पर क्या आपत्ति है? लेकिन मेरा यह विचार है कि प्रत्येक वार को हमारा किसी न किसी दिशा में दिशा शूल अवश्य है तो क्या जिस दिन जिस दिशा में हमारे लिए दिशा-शूल है क्या उस दिन उस दिशा में यात्री अपनी यात्रा करना छोड़ देते हैं? क्या बसें, रेलगाड़ियाँ, कारें आदि उस दिन उस दिशा में चलना बंद हो जाती हैं? और क्या उस दिन उस दिशा का दिशा-शूल बस चालक या अन्य वाहन चालक चाहे किसी भी वाहन का चालक क्यों न हो उसके लिए हो तो क्या वह उस दिन छुट्टी लेकर घर पर बैठेगा, अपनी ड्राइविंग की नौकरी को खतरे में डालेगा? नहीं, क्योंकि उसे तो हर दिन अपनी नौकरी पर जाकर ही आजीविका मिलेगी। प्रत्येक दिन प्रत्येक दिशा में लाखों लोग यात्रा करते हैं और सभी अपना काम पूरा करके सकुशल अपने घर लौट आते हैं। मान लो कि सुरेश नाम का कोई व्यक्ति जिसके लिए मंगलवार को उत्तर दिशा में जाने में दिशा-शूल की बाधा आदरणीय पण्डित जी ने बताई हो और वह उनके आदेश का उल्लंघन कर उस दिशा में किसी अपने आवश्यक कार्य को करने के लिए चला जाए तो उसके जीवन में क्या दुर्घटना होगी, क्या वे पण्डित जी बता सकते हैं? नहीं बता सकते। क्योंकि वे तो अपने पास आने वालों को यह कह कर डराते हैं कि कुछ भी हो सकता है तुम्हारे साथ या तुम्हारे बच्चों के साथ, या किसी नजदीकी या दूर के रिश्तेदार के साथ। अब जरा सोच-विचार करके बताना कि पण्डित जी की आज्ञा का उल्लंघन तो वह व्यक्ति करे और दुर्घटना घटे बेचारे उसके निरापराध रिश्तेदारों के साथ। इसी संदर्भ में मान लो वह व्यक्ति बिना किसी रूकावट के यात्रा करके जिस काम के लिए गया था वह काम भी बिना किसी विघ्न या बाधा के करके सुरक्षित घर लौट आया और आते ही उसे पता चले कि उसके जाने के कुछ घंटों बाद उसके मामा जो कि लगभग 85 की उम्र में कैंसर जैसी भयावह बीमारी से ग्रसित होकर पहले से ही मृत्यु शैय्या पर पड़े थे, की मृत्यु का समाचार आ गया था तो बताओ क्या यह बुरी खबर उसके द्वारा दिशा-शूल के दिन यात्रा करने से आई थी? अगर आप ऐसा मानते हैं तो ये तो वही बात हुई कि 'करे कोई और भरे कोई' और चलो ये भी मान लो कि उसके किसी प्यारे की मृत्यु कम उम्र में होने की सूचना उसे मिली जो उसी दिशा में रहता था तो बताओ कि क्या वह दोबारा उस दिशा में उस दिन उसके शोक में नहीं जायेगा? अब जो ये मरा है इसका कारण दिशा-शूल कदापि नहीं हो सकता क्योंकि उसे वहाँ जाकर पता लगा कि वह दुकान में शार्ट-सर्किट होकर आग लगने से आग की चपेट में दो दिन पहले ही आ गया था जिससे उसकी मृत्यु हो गई तो इससे सुरेश की यात्रा का क्या लेना-देना इस प्रकार की दुर्घटना तो किसी के भी साथ कभी भी हो सकती है क्योंकि दुर्घटनाओं पर किसी का कोई वश नहीं चलता। और यह ईश्वर की बनाई सृष्टि का यह भी एक अटल सत्य है कि जो जैसा कर्म करता है उसे उसका फल अवश्मेव ही भोगना पड़ता है, कोई किसी का किया नहीं भुगतता अतः दिशा-शूल का हमारे कर्मों से कोई लेना-देना नहीं। कहीं-कहीं तो बुजुर्ग महिलाएँ दिशा-शूल का प्रभाव वर्ष भर तक मानती हैं अर्थात् यदि दिशा-शूल के दिन आप सकुशल यात्रा कर घर लौट आए और लगभग 4 या 5 महीने बाद या एक वर्ष के भीतर कोई अनिष्ट घर में हो गया तो उसका कारण भी दिशा-शूल को ही माना जाता है। इसका तो एक ही मतलब निकलता है कि परमात्मा के कार्यालय में दिशा शूलों का एक ब्यौरा रहता है और समस्त कागजात कम से साल भर तक तो रखे ही जाते हैं और अजब निराली बात तो यह है कि लोग दिन-रात चोरी-चकारी करते, झूठ बोलते, बेईमानी से धन कमाते हैं और जरा भी यह विचार नहीं करते कि हमारे साथ जो अनिष्ट हो रहा है वह हमारे इन्हीं कुकर्मों का ही फल है। यदि लोग इस प्रकार गहराई से चिंतन करने लगे तो लोगों के जीवन में सुधार आयेगा और लोग पाप कर्म छोड़कर पुण्यात्मा हो जायेंगे। लेकिन कोई यह कभी नहीं कहता कि मैंने अमुक के साथ व्यापार में धोखा किया था या किसी निर्दोष को झूठे केस में फंसाया था जिससे उसे जेल हो गई थी, शायद मेरे इन्हीं कुकर्मों के कारण आज मेरे साथ फलां-फलां अनिष्ट हो रहा है। क्या कभी इस प्रकार कहते सुना है आपने किसी को? कभी ऐसा कोई नहीं कहता, सब के सब अपने साथ हुए अनिष्ट का दोष ग्रह-नक्षत्रों, राशि और तारों, दिशा-शूल और तिथि दोष आदि पर मढ़ देते हैं अपने कृत कर्मों पर किसी का ध्यान ही नहीं है।

ईश्वरीय कर्म-फल व्यवस्था को न समझने के कारण ही हम ऐसी भ्रान्त धारणा बना लेते हैं लेकिन इन ग्रह-नक्षत्रों का, राशि और तारों का, तिथि दोष और दिशा-शूल आदि का हमारे साथ हुए अनिष्ट से कोई लेना-देना नहीं है। क्योंकि यह सिर्फ हमारा भ्रम ही है और कुछ नहीं। यहाँ एक 'बात और विचारणीय है कि क्या रोजाना होने वाली दुर्घटनाएँ दिशा-शूल आदि के कारण ही होती हैं? नहीं, क्योंकि हर दिशा में हर रोज वायुयान, रेलगाड़ी आदि चलती हैं लेकिन कोई गार्ड यह नहीं पूछता कि आज पूर्व की ओर जाना चाहिए, आज पश्चिम की ओर जाना चाहिए और इनमें लाखों लोग हर दिशा में यात्रा करते हैं। उन लाखों यात्रियों में से कुछ लोगों का यदि काम नहीं भी बन पाता और कुछ के साथ यदि कोई दुर्घटना भी हो जाती है एवं किसी-किसी का भारी नुकसान भी हो जाता है तो उनके सबके साथ हुई अनहोनियों का कारण दिशा-शूल तो हो ही नहीं सकता। वह तो उनके अपने पूर्व जन्मों के संचित कर्मों का ही फल होता है। ऐसी दुर्घटनाएँ तो घर पर बैठे-बिठाए भी हो जाती हैं। सोचिए जरा यदि पण्डित जी के पत्रा में देखकर रेलें आदि चला करें तो संसार के सारे व्यापार चौपट हो जाएं, कोई काम न चले। विचार करने की बात यह है कि जब भारत में एस. एस. सी. परीक्षाओं का समय होता है तो सम्पूर्ण भारत के हजारों-लाखों बच्चे अपने-अपने क्षेत्रों से बहुत दूर-दूर परीक्षाएं देने आते हैं और हर दिशा से आते हैं क्या वे सभी दिशा शूल का विचार करते हैं? यदि ऐसा विचार करने लगेंगे तो अपनी दकियानूसी सोच के कारण वे अपने जीवन में आगे बढ़ने का सुनहरा अवसर खो देंगे। क्योंकि परीक्षार्थियों के लिए तो दिशाओं का हिसाब लगाकर अलग-अलग समय नियत नहीं हो सकता। और गहराई से चिन्तन करें तो पता लगेगा कि कई बार ऐसा होता है कि आप व आपके कोई भी रिश्ते नातेदार घर से कहीं बाहर भी नहीं जाते और फिर भी आपके साथ कुछ अनिष्ट हो जाता है, तो क्या आप उसका दोष भी दिशा-शूल को दोगे? अच्छा एक बात का सीधा-सीधा उत्तर दो कि यदि किसी वार को दिशा में जाने से धन-लाभ इन पण्डितों (फलित ज्योतिषयों) को होता हो और दुर्भाग्य से इनके लिए उस दिन उस दिशा में यात्रा करने में दिशा-शूल हो तो क्या ये उस दिशा की ओर प्रस्थान नहीं करेंगे? ऐसा कदापि हो ही नहीं सकता कि ये न जाए। अतः हमें अपने भीतर पल रहे अन्धविश्वासों का त्याग करना चाहिए क्योंकि हिन्दू कहे जाने वाले लोगों में ऐसी बहुत सी निर्बलताएँ हैं जिसके कारण लाखों लोग अविद्या के गर्त में पड़कर लक्ष्यविहीन जीवन जी रहे हैं। एकमात्र अविद्या ही इन सब फलित विद्याओं का कारण हैं।

आईए! जानने का प्रयास करते हैं कि ये पाखण्डी अपनी कमाई का रास्ता कैसे निकालते हैं। मैंने पहले भी बताया कि जब किसी को अति आवश्यक काम से दिशा-शूल की दिशा में यात्रा करना अनिवार्य हो तो ये पैसे के पुजारी दिशा-शूल निवारण के उपाय बताकर अपना उल्लू कैसे साधते हैं शायद ही कोई इनकी इस विद्या से अछूता हो। जब इस प्रकार दिशा-शूल के कष्ट से छुटकारा पाने के लिए कोई इनके पास आता है तो दिन के हिसाब से ये उसे सोमवार की खीर मंगलवार को मट्ठा, बुधवार को गर्म घी, बृहस्पतिवार को दही, शुक्रवार को गर्म दूध और शनिवार को तिलान्न एवं रविवार को मलाई खाकर यात्रा करने से दिशा-शूल का दोष दूर हो जायेगा। मानव कितनी आसानी से इनके बुने इस चक्रव्यूह में फँस जाता है और तनिक भी विचार नहीं करता कि क्या उपरोक्त खीर, मट्ठा, घी, दही, दूध, तिलान्न या मलाई आदि खाकर यात्रा पर जाने से दिशा-शूल निवारण हो जायेगा? यदि दूध, दही, तिल, गुड़, मलाई आदि से भाग्य बदलता तो संसार में कोई भी दुःखी नहीं होता। इन पण्डितों का तो काम ही यह है। पहले तो ये दिशा-शूल आदि बताकर लोगों को भयभीत कर देते हैं और बाद में दूध,

अगले पृष्ठ पर जारी है

ईमानदारी ही आनन्दमय जीवन की कुंजी है

आचार परमो धर्मः

– श्रीमती अरुणा सतीजा

परमपिता परमात्मा ने प्रकृति से सुसज्जित सुन्दर सृष्टि का निर्माण कर अपने प्रिय मानव को सौंप दी। क्योंकि मानव ही श्रेष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं सदाचारी प्राणी है जो ईश्वर की इस अद्‌भुत रचना को विस्तृत स्वरूप दे सकता है। मानव मन असीम शक्तियों का भण्डार है। उसमें बुद्धि है, विवेक है, वह तेज एवं बल का धनी है। मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में होने वाले विभिन्न प्रकार के आश्चर्यजनक आविष्कार इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। छोटे से मोबाइल फोन का विश्लेषण करके देख लो।

मानव एक विशाल सागर है। जिस प्रकार सागर में विभिन्न प्रकार के छोटे बड़े व भयंकर जीव जन्तु व वनस्पतियाँ हैं तथा उसके गर्भ में अनमोल मोती भी छिपे हैं। यह सब प्राप्त करने वालों की इच्छा पर निर्भर करता है कि वह मछुआरे बन मछलियाँ पकड़ते हैं या गहरे पानी पैठ मोती निकाल लाते हैं।

प्रतिदिन एक सोने का अण्डा देने वाली मुर्गी की कहानी लगभग सभी ने सुनी होगी। क्या मुर्गी के पेट में असंख्य सोने के अण्डे थे? नहीं। फिर उस व्यक्ति ने मुर्गी के पेट को क्यों चीर डाला? इसका उत्तर देती है हमारी महान् संस्कृति।

वैदिक संस्कृति हमें आचार विचार तथा सद्‌व्यवहार का पाठ पढ़ाती है। सद्-आचार-विचार रहित मनुष्य पशु तुल्य है। तो फिर आज मानव 'नर-पशु' क्यों बन गया है। एक ओर चकित करने वाले आविष्कार तो दूसरी ओर भ्रष्टाचार, अनैतिकता तथा व्यभिचार क्यों? क्योंकि ईमान' खत्म हो गया है। आज मानव मन ईमानदारी से क्यों शून्य है?

ईमानदारी क्या है? ईमानदारी कोई वस्तु नहीं है परन्तु मानव मन की शुद्ध भावनाओं का रूपान्तरण है।

वेद भी यही कहते हैं। 'मनुर्भव' हे मानव तू मानवीय गुणों को धारण कर। अफसोस आज मानव ने बेईमानी का दामन थाम लिया है। क्यों? इसका मूल कारण है -अविद्या अर्थात् असत्य को सत्य मानना। क्योंकि मानव उस महान् सत्ता को जिसे ईश्वर कहते हैं आज भुला चुका है। आज मनुष्य को चकाचौंध करने वाले भौतिक सुख आकर्षित कर रहे हैं। उसे इस जीवन के उस पार कुछ भी दिखाई नहीं देता। जिस प्रकार एक शराबी को शराब पीने के बाद सुखमय जीवन की अनुभूति होती है परन्तु नशा उतरने के बाद बर्बादी, ठीक उसी प्रकार मानव बेईमानी के दलदल में धंसता जा रहा है। पद और धन लोलुपता जीवन का लक्ष्य बन गये हैं। लोग रातों रात कुबेर बनने के सपने लेने लगे हैं जिसका परिणाम है जीवन के हर क्षेत्र में बेईमानी ही बेईमानी। इसके परिणामों को देखकर रूह (आत्मा) कांप उठती है। मानव की सेवा करने वाले देवता तुल्य डॉक्टर मरीज की किडनी, आँख व रक्त जैसे अमूल्य अंगों के सौदागर बन गये हैं। दवाईयों तथा खाद्य पदार्थों जैसी जीवनदायिनी वस्तुओं में मिलावट के कारण लोग भयंकर तथा असाध्य रोगों के शिकार हो रहे हैं। मानव भूल जाता है कि अगर वह नकली व विषैली दवाईयाँ बनाकर दूसरों के जीवन से खिलवाड़ कर रहे हैं तो कोई और भी है जो खाद्य पदार्थों में मिलावट कर उन्हें मौत के मुँह में धकेल रहा है। पवित्रता के प्रतीक साधु सन्त भी अपने स्वार्थ के लिए लोगों को अन्धविश्वासों के अंधे कुएँ में धकेल रहे हैं। एक साधारण चपरासी से लेकर देश के कर्णधार तक बेईमानी के शिकार हैं। इसीलिए कोई भी किसी को कुछ भी कहने का हकदार नहीं है। इसका अर्थ नहीं कि कोई भी व्यक्ति चरित्रवान, सदाचारी व ईमानदार है ही नहीं। ऐसा कभी किसी भी युग में नहीं होता। अच्छाई और बुराई का तो चोली दामन का साथ है मात्र अन्तर होता है अनुपात का, संख्या का।

आज बेईमानी अपनी चरम सीमा को छू रही है। प्रकृति का नियम है कि कोई भी वस्तु कितनी भी ऊँचाई पर क्यों न जाए अन्त में नीचे लौटकर आती है। अब समय आ गया है चिन्तन व मनन का। बेईमानी से हमने क्या पाया क्या खोया। मानव जीवन के मूल लक्ष्य आनन्दमय जीवन से कितने दूर हो गए? आज आवश्यकता है अपने गौरवमय इतिहास के पन्नों को उलटने की। भारतीय जीवन का इतिहास तो गौरवमयी जीवनियों से भरा पड़ा है। एक-एक विभूति का जीवन एक ज्वाला है जिसमें प्रज्ज्वलित करने की असीम शक्ति है। मानव भूल गया है कि जीवन का एक उज्ज्वल पक्ष भी है जिसका दरवाजा आनन्दमय जीवन की ओर खुलता है।

ईमानदारी के मुख्य स्तम्भ हैं - सत्यमय एवं यज्ञमय जीवन एवं कर्तव्य पालन - 'यज्ञमय जीवन' यज्ञमय जीवन का अर्थ है अगर डॉक्टर हो तो रोगी की सेवा कर उसे प्राणदान करो, अध्यापक हो तो बच्चों का निर्माण कर राष्ट्र को चरित्रवान नागरिक दो, माता-पिता हो तो आज्ञाकारी एवं सेवाभावी सन्तति का निर्माण करो, राजनायक हो तो राज्य को उन्नति के शिखर पर ले जाकर चक्रवर्ती साम्राज्य की स्थापना करो, अगर तुम महापुरुष हो तो लोगों को सत्यमय जीवन की राह बताओ। एक ईमानदार कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति ईश्वर की सर्वोत्तम रचना है।

1949 में सी. वी. रमन ने अपनी संस्था के लिए असिसटेन्ट पद का विज्ञापन दिया। बहुत से उम्मीदवार साक्षात् के लिए आये। एक युवक असफल रहने के बाद भी ऑफिस के बाहर खड़ा दिखाई दिया। रमन जी के पूछने पर उसका उत्तर था 'सर मैं जानता हूँ कि मेरा सलेक्शन नहीं हुआ परन्तु मैं यहा- आपके संस्थान की ओर से दिया गया यात्रा खर्चा लौटाने के लिए खड़ा हूँ। यह सुन रमन जी अवाक रह गये। उनके मुँह से निकला तुम्हारा सलेक्शन हो गया। तुम्हारी फिजिक्स भले कमजोर हो, वह मैं तुम्हें सिखा दूँगा। मेरे लिए अधिक महत्त्वपूर्ण है कि तुम एक चरित्रवान व्यक्ति हो। यह सत्य कथन है कि एक ईमानदार नौकर खजाने की चाबी प्राप्त करता है जबकि बेईमान पुत्र को उसे छूने की आज्ञा नहीं होती।

यदि कोई व्यक्ति बलवान हो, धनवान हो, विद्वान् हो, बुद्धिमान हो परन्तु आचारवान न हो तो उसका जीना मृत्यु से भी बढ़कर है क्योंकि मृत व्यक्ति कोई कुकर्म नहीं करता।

ईमानदार व्यक्ति की जीवन क्रियाएँ उदाहरण बन मरणोपरान्त भी प्रेरक होती है। बेईमानी का दोस्त है झूठ। जो व्यक्ति बेईमान होगा व झूठा भी होगा। ईमानदार बनो, प्रलोभनों में मत फँसो। यह मानव विनाश की सीधी गली है।

एक विद्वान् ने सच ही कहा है कि जिस प्रकार मकान के लिए छत की, अन्धे व लंगड़े के लिए लाठी की, कुँए के लिए पानी, लेखन के लिए लेखनी की आवश्यकता होती है उसी प्रकार मनुष्य के लिए ईमान की आवश्यकता होती है।

राष्ट्र के श्रेष्ठ पुरुषों, पवित्र आत्माओं उठो, जागो औरों को जगाओ। बेईमानी को छोड़ने और ईमानदारी को धारण करने का संकल्प दोहराओ। कहीं देर न हो जाए और जीवन व्यर्थ में नष्ट हो जाए। **संसार में ईमान ही सर्वोत्तम धन है।**

आज देश को पुनर्जागरण की आवश्यकता है। आओ सभी मिलकर श्री कृष्ण तथा महर्षि स्वामी दयानन्द की तरह एक बार पुनः वैसा शंखनाद करें कि जन-जन के हृदय में शुद्धता, पवित्रता तथा सतयता की शहनाई गूँज उठे। राष्ट्र में पुनः जागरण हो। हर मन शान्त हो। क्योंकि मन शान्त होता है तो बाहर का सारा वातावरण शान्तिमय दिखाई देता है। मंत्रों में जादुई शक्ति होती है। वेदमंत्र द्वारा शांति की प्रार्थना करें।

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ - यजु. 36/17

फ्लैट नं.-101, सौम्या इनक्लेव, बी-9 ध्रुव मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राज.)-302004, मो.:-9460183873

पिछले पृष्ठ का शेष

क्या किसी विशेष कार्य के लिए यात्रा पर जाते समय 'दिशा-शूल' आदि का....

मलाई आदि खाने के लिए बताकर प्रसन्न भी कर देते हैं। इस प्रकार दक्षिणा भी मिल गई और दिशा-शूल निवारण भी हो गया। यदि पण्डित जी जाते समय कोई कठिन उपाय बताते तो वह शीघ्रता से हो भी नहीं पाता और यजमान के मन में भय भी बना रहता लेकिन पण्डित जी ऐसा न करके सरल उपाय बताते हैं क्यों? क्योंकि वह तो अपने यजमान के धन के साथ-साथ उसका भय दूर करके उसका विश्वास भी जीतना चाहते हैं ताकि भविष्य में भी वह उसके पास इसी प्रकार उसका ग्राहक बनकर आता रहे और पण्डित जी की रोजी-रोटी का धंधा भी चलत रहे। वास्तव में पण्डित जी के बताए उपाय से थोड़े ही कुछ होना था, होता तो तब जब दिशा-शूल वास्तव में खतरा पैदा करने वाली कोई वस्तु होती, यह तो आम आदमी की मानसिक कमजोरी का फायदा उठाकर केवल धन के लोभ में पूजा के नाम पर ढोंग करने वालों के द्वारा फैलाया गया भ्रमजाल ही है और कुछ नहीं। पुरातन काल में घने जंगलों में डाकू-लुटेरों आदि का भय बना रहता था और निजी खेती-बाड़ी आदि के व्यापार के कारण बहुत कम लोग ही अकेले दूसरे क्षेत्रों में जाते थे और किसी को किसी कारण वश जाना भी पड़ता था तो अक्सर लोग टोलियां बनाकर चलते थे परन्तु हर बार ऐसा सम्भव नहीं होता था अतः उनके मन में उपरोक्त लुटेरों का भय बना रहे और उसका फायदा उठाकर पण्डें अपनी जेबें गर्म करते रहें इसके लिए ही शायद इन्होंने ऐसी भ्रमित करने वाली बातें फैलाई हो और भयग्रसित होने के कारण ही हमारे पूर्वज इनके फैलाये इस भ्रम-मूलक जाल में फँसते चले आए हों। लेकिन नई पीढ़ी के लिए ये बातें लागू नहीं होती क्योंकि आज तो हर क्षेत्र में कारें, बसें और अन्य यातायात के साधन जैसे रेलगाड़ियाँ आदि चलती हैं यात्रा करना अति आसान हो गया है फिर पुराने रिवाजों के नाम पर आज भी पण्डित जी के पास दिशा-शूल का उपाय पूछने जाना कहां की बुद्धिमानी है।

अंत में यह अन्धविश्वास रूपी रोग कितना भयंकर है इसकी गणना शायद ही किसी ने की हो। आज के डेंगू और इबोला वायरस से भी अत्यधिक घातक है। सब जानते हैं कि डेंगू और इबोला वायरस से कितने ही लोगों की मृत्यु हो जाती है लेकिन यह न समझिए कि दिशा-शूल कोई छोटा रोग है यह डेंगू और इबोला वायरस तो मनुष्य के केवल शरीर पर ही हमला करते हैं लेकिन दिशा-शूल का प्रभाव तो सीधे मनुष्य के मस्तिष्क पर पड़ता है। मानसिक भय के कारण ही तो अन्धविश्वास की जड़ें मजबूत होती हैं। शारीरिक रोग के कारण तो केवल हमारा शरीर ही निर्बल होता है लेकिन अन्धविश्वास के कारण तो हमारी पीढ़ियाँ भी नष्ट होने के कगार पर पहुँच जाती है। आज की पीढ़ी को अब अपने अन्दर परिवर्तन करना होगा, उसे समझना होगा कि अब इन भ्रमित करने वाले टोटकों का कोई तुक नहीं? कहने का तात्पर्य यह है कि खासकर महिलाओं को इस असत्य विद्या का न केवल त्याग करना चाहिए बल्कि जड़मूल तक नष्ट कर देना चाहिए ताकि उनके सम्पर्क में रहने वाले अबोध बालक और आने वाली पीढ़ियाँ इस प्रकार के मानसिक आघात पहुँचाने वाले रोग से जीवन-पर्यन्त भयमुक्त हो सके। यही सन्देश आर्य समाज देता है। इसलिए प्रभु की अमृतवाणी वेद का आधार लेकर महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के चौथे नियम में कहा है कि ''सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए'' और आठवें नियम में लिखा है कि ''अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।'' हमें महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के मन्तव्य को भली प्रकार से समझना होगा ताकि भय के नाम पर चल रही लूट से हम छुटकारा पा सकें।

- चरित्र निर्माण मण्डल, ग्राम-शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली-110061, मो.:-9871644195

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज राजनगर गाजियाबाद का साधारण सभा का वार्षिक अधिवेशन रविवार 21 जून, 2015 को सम्पन्न हुआ जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी वर्ष 2015-16 के लिए सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए :-

1. श्री श्रद्धानन्द शर्मा - प्रधान
2. श्री सत्यवीर चौधरी - मंत्री
3. श्री शशिबल गुप्ता - कोषाध्यक्ष

- बाबूराम शर्मा विभाकर, प्रचार मंत्री

संस्कारों के सन्दर्भ में ऋषि दयानन्द

– डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, अमेठी

वेद का धर्म

वेद का धर्म वैदिक धर्म है ज्ञान का धर्म है, सत्य का धर्म है, न्याय और प्रकाश का धर्म है। वह हिन्दू धर्म, पौराणिक धर्म, शैव-शाक्त कापालिक या वैष्णव धर्म नहीं है वह मानव-धर्म है। वेद का 'आर्य' शब्द जाति-वर्ण काल या देश का वाचक नहीं है, वह गुणवाचक है। स्वयं वेदों का 'विजानीहि आर्यान् ये च दस्यव:' (ऋग्वेद 1/51/8) मन्त्र बताता है कि वेद का 'आर्य, दस्यु = डाकू या लुटेरा = शोषक का विरोधी है। वेद की भाषा कभी किसी काल की जनभाषा नहीं रही। जनभाषा 'संस्कृत' रही है। संस्कृत की तरह अन्य सभी भाषाओं में वेद के शब्द हैं। वैदिक भाषा के नियम बहुत ही विस्तृत हैं और इसके शब्द भी यौगिक हैं। संस्कृत भाषा के नियमों में संकोच और शब्दों की प्रवृत्तिरूढ़ि होती गई है अन्य भाषाओं की तरह। आधुनिक भाषाशास्त्री भी भारोपीय भाषा परिवार का मूल वैदिक भाषा को मानते हैं। उनके भाषाविदों का यह सुझाव भी रहा है कि इन्डो-योरोपियन, इण्डो-जर्मनिक या इण्डो-हिट्टाइट के स्थान में इस भाषा परिवार का नाम आर्य परिवार रखा जाए। प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डॉ. उदयनारायण तिवारी का कहना था कि स्वामी जी का 'आर्य भाषा' नाम रखना बहुत बड़े अर्थ गाम्भीर्य और दूरदृष्टि का सूचक था। वेद का परमेश्वरीय नाम 'ओ३म्', धार्मिक कृत्य 'यज्ञ', अभिवादन 'नमस्ते' और श्रेष्ठ सज्जन का नाम 'आर्य' इन शब्दों में व्यापक दृष्टि, अर्थ विशदता, सर्वजन ग्राह्यता और असाम्प्रदायिकता है। इनकी तुलना इसके समानार्थी अन्य किसी शब्द से नहीं की जा सकती।

ऋषि और वेद का अर्थ

यह अच्छी तरह सबको ज्ञात है कि वेदों का सम्बन्ध, द्रष्टृत्व ऋषियों से है – 'साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूव:'। अत: वेदों का मर्म या अर्थ ऋषि दृष्टि से ही उद्घाटित होता है। वैदिक ऋषि मधुच्छन्दा, वशिष्ठ, वामदेव, ऋषिकाएँ अपाला घोषा, रोमशा से लेकर परवर्ती ऋषि ऐतरेय, याज्ञवल्क्य, गोपथ, मनु, यास्क पाणिनी और पतञ्जलि तक सभी ऋषियों की वैदिक मान्यताएँ तक है। उसमें कोई मत वैभिन्य नहीं है। वेदों के शब्द यौगिक हैं, उनमें लौकिक इतिहास नहीं हैं, वे सभी सत्य विद्याओं के मूल हैं, धर्म-अर्थ-काम त्रिवर्ग के साधक सभी शास्त्रों के वे उत्स हैं स्त्रोत हैं। व्याकरण, शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष, न्याय, सांख्य, योग, मीमांसा, वैशेषिक और वेदान्त, औपनिषदिक ब्रह्मविद्या, प्राणविद्या, यज्ञीय कर्मकाण्ड, आयुर्वेद, धनुर्वेद, अर्थवेद तथा गान्धर्ववेद और विविध विद्याओं गणित, राजनीति, सैन्य संचालन, कृषि, व्यापार, भूगर्भ, वनस्पति एवं जन्तु विज्ञान प्रभृति शाखाओं का विस्तार वैदिक ऋचाओं की प्रेरणा से हुआ है। उनमें विद्या, युक्ति, तर्क और विज्ञान के विरुद्ध कुछ भी नहीं है। ऋषियों की यही दृष्टि दयानन्द को भी मान्य है। दु:ख है कि वेदार्थ की यह प्राचीन दृष्टि से मेल नहीं खाते। अत: ऋषि दयानन्द उन्हें चुनौती देते हैं। यही कारण है कि ऋषि दयानन्द यास्क से सहमत हैं सायण और महीधर से नहीं। पाणिनि से सहमत हैं भट्टोजीदीक्षित से नहीं। मनु से सहमत हैं 'कुल्लूक भट्ट' से नहीं। व्यास और जैमिनि से सहमत हैं, शंकराचार्य और शबरस्वामी से नहीं। क्योंकि मूलसूत्रकार ऋषियों के ग्रन्थों के व्याख्याकार आचार्यगण बहुधा मूल पथ से भटककर सम्प्रदाय का प्रवर्तन कर देते हैं।

ऋषियों के प्रतिनिधि – 'दयानन्द'

स्वामी दयानन्द जिस धर्म के प्रचारक हैं उपदेष्टा हैं, वह वेद का धर्म और ऋषियों का धर्म है। आज का हिन्दू धर्म या पौराणिक धर्म, जिसे सनातन धर्म भी कहा जाता है, दुर्भाग्य से प्राचीन (पुराण का यौगिक अर्थ) या शाश्वत ('सनातन' शब्द का अर्थ) सिद्धान्तों का पोषक नहीं रह गया है। उदाहरण के लिए हिन्दुओं में प्रचलित कर्मकाण्ड पर दृष्टिपात कीजिए।

सन्ध्यादि नित्यकर्म में ऊँ केशवाय नम:। ऊँ नारायणाय नम:। ऊँ माधवाय नम: (नित्यकर्म पूजा प्रकाश, पृ. 18 गीता प्रेस गोरखपुर, दशम संस्करण, 2053 वि. सं.) ये तीन लौकिक संस्कृत वाक्य बोलकर आचमन किया जाता है। जबकि स्वामी दयानन्द जी ने 'शन्नो देवीरभिष्टय' (यजुर्वेद 36/12) तथा 'अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा' प्रभृति (आश्वलायन गृहयसूत्र 1/24/12, 21, 22) तीन मंत्रों से क्रमश: सन्ध्या और अग्निहोत्र में 'आचमन' का विधान किया है। वेदों में भी उच्चावचता की मान्यता के कारण दैनिक संध्या में पौराणिक लोग अथर्ववेद का मन्त्र नहीं बोलते। सन्ध्या में 'अघमर्षण' तथा 'उपस्थान' के मन्त्रों (पूर्वकाल से प्रचलित विधि) को यथावत् स्वीकार करते हुए स्वामी जी ने 'मनसा परिक्रमा' के लिए अथर्ववेद के प्राची दिग् (अथर्व. 3/27/1-6) प्रभृति 6 मन्त्रों का भी विनियोग किया है। ऋषि दयानन्द प्रवर्ति संस्कार की विधि या कर्मकाण्ड में सभी वेदों के साथ-साथ ऋषियों के गृहयसूत्र, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक तथा श्रोतसूत्रों की भी आवश्यक मान्यतायें संगृहीत हैं। संध्या, अग्निहोत्र और संस्कार की पद्धतियों में ऋषि दयानन्द के अतिरिक्त अन्य किसी आचार्य का ग्रन्थ इतना व्यापक नहीं है, जिसमें पूर्व ऋषियों के प्रमाणों का अधिकाधिक ग्रहण करके उसमें सामंजस्य बिठाने का प्रयत्न किया गया हो। दयानन्द से पूर्व संस्कारों की परम्परा द्विजों से संकुचित होकर ब्राह्मण परिवारों तक सीमित हो गई थी। ब्राह्मण भी अपनी-अपनी वेद शाखा के गृह्यसूत्र के अनुसार संस्कार सम्पन्न करा लेते हैं। स्वामी जी ने इस परम्परा को तोड़कर जन साधारण में संस्कारों का प्रचलन कराने के लिए चारों वेदों के गृह्यसूत्र के अनुसार (ऋग्वेद का आश्वलायन, यजुर्वेद का पारस्कर, सामवेद का गोभिल तथा अथर्ववेद का शौनक) सम्यक् रूप से आर्ष संस्कार पद्धति प्रस्तुत की। इस प्रकार स्वामी जी सभी ऋषियों और चारों वेदों के प्रशंसक हैं और प्रतिनिधि प्रवक्ता भी। उन्होंने कोई नवीन मत-मतान्तर की स्थापना नहीं की है। उनका संदेश वेदों का संदेश है, ऋषियों का संदेश है, संसार के सभी मनीषियों के संदेशों का सार है।

संस्कार विधि का वैशिष्ट्य

स्वामी दयानन्द को 'संस्कार विधि' के निर्माण करने की क्यों आवश्यकता पड़ी? इसका स्थूल रूप से यही उत्तर है कि आर्य जाति में वेदादिशास्त्र विहित संस्कारों का अभाव देख, ऋषि ने करुणामय मन से इस अध:पतित जाति के पुनरुत्थानार्थ इस ग्रन्थ को लिखा।

महर्षि दयानन्द से पूर्व आर्य लोगों में केवल थोड़े से ही संस्कारों का लुप्तप्राय रूप से प्रचार था। 'गर्भाधान' और 'पुंसवन' तो लोगों के लिए स्वप्न हो चुका था। 'सीमन्तोन्नयन' संस्कार का प्रचार केवल स्त्रियों के विधि द्वारा ही प्रचलित था जहाँ तक कि बिना मन्त्रादि के स्त्रियाँ स्वयं कुछ एक फल या मिठाई आदि लेकर गर्भिणी की झोली में डाल देती थीं। 'जातकर्म' का विचार ही न था। स्व-जातियों को बुलाकर लोग स्वयं नाम रखकर 'नामकरण' संस्कार की पूर्ति कर दिया करते थे। 'निष्क्रमन' और अन्नप्राशन' तो किसी को स्मरण भी न था। 'मुण्डन संस्कार' अपूर्ण और अवैदिक रीति से प्रचलित था। 'कर्णवेध' स्त्रियाँ स्वयं या किसी यवन (=मुसलमान) से करा लेती थीं। 'उपनयन' भी अपूर्ण रीति से असमय पर होता था। कुछ लोग तो विवाह-कार्य प्रारम्भ होने पर विवाह-स्नान के समय में यज्ञोपवीत धारण करते थे। कई एक देवी मन्दिरों में देवी-देवताओं के चरणों से यज्ञोपवीत का स्पर्श करके, बिना मन्त्र ही अपनी सन्तान का यज्ञोपवीत करते थे।

उपनयन का फल ब्रह्मचर्य धारण पूर्वक 'वेदारम्भ' का तो किसी को पता भी न था, फिर 'समावर्तन' के लिए क्या कहा जाये? केवल एक विवाह संस्कार को ही सब संस्कारों से अधिक प्रधानता दी जाती थी। वहां भी वाह्य आडम्बर बहुत और विधि का विचार बहुत थोड़ा था। उसमें भी शास्त्र विरुद्ध इतनी कुरीतियाँ थीं कि जिनका पूर्ण रूप से वर्णन किया जाये तो एक भिन्न शास्त्र बन जाए। उन नाम मात्र के संस्कारों में भी ब्राह्मणों ने नवग्रह-पूजन, गणेश-पूजनादि अनेक प्रकार की अवैदिक और अनार्ष विधियाँ चलाई हुई थीं। वेदों में इन ग्रहों की पूजा और गणेशादि की पूजा का वर्णन तो होना ही कहां था, पर आश्चर्य तो यह है कि इनका मूल पारस्कर, आश्वलायन, गोभिलादि प्रसिद्ध गृह्यसूत्रों में भी कहीं नहीं मिलता, जो कि संस्कारों के मूल ग्रन्थ हैं, और जिनकी सत्ता से ही संस्कारों की सत्ता है। न जाने फिर इन पौराणिक लोगों ने इस प्रकार की कल्पित बातों का प्रक्षेप इन पवित्र संस्कारों में क्यों किया?

इन 'संस्कार विधि' ग्रन्थ को पहले महर्षि ने वि. सं. 1932 में लिखा था। फिर 8 वर्ष के अनन्तर आषाढ़ मास वि. सं. 1940 में इस ग्रन्थ का परिमार्जित रूप से शोधन कर द्वितीय संस्करण छपवाया।

अपनी संस्कार विधि के प्रारम्भ में ही महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि –

वेदादिशास्त्रसिद्धान्तमाध्याय परमादरात्।
आर्योह्यिं पुरस्कृत्य शरीरात्मविशुद्धये॥

(संस्कार विधि पृ.-3)

अर्थात् वेदादिशास्त्रों का परमादर से चिन्तन करके आर्यों के इतिहासानुकूल शरीर और आत्मा की शुद्धि के लिए (यह ग्रन्थ रचा है)। 'उपदेश-मंजरी' की व्याख्यान माला में सातवें व्याख्यान, जो स्वामी जी ने जुलाई, 1876 ई. में पूना नगर में दिया था, उसमें 'कर्णवेध' संस्कार का वर्णन नहीं है। वहाँ उन्होंने गृहाश्रम को भिन्न लिखकर संस्कारों की गणना 16 षोडश की है। प्रथम 'संस्कार विधि' जो 1933 वि. सं. में प्रकाशित हुई थी, उसमें 'कर्णवेध' का वर्णन तो मिलता है, परन्तु वहाँ स्वामी जी ने 'वानप्रस्थाश्रम संस्कार' को भिन्न न मानकर उसे 'संन्यास' के अन्तर्गत माना है।

इन दो परस्पर विरुद्ध बातों का यह उत्तर है कि पहले 1875 ई. में स्वामी जी ने 'कर्णवेध' को बहुत उपयोग न समझा था। क्योंकि इसका वर्णन पारस्कर गृह्यसूत्र के कात्यायन परिशिष्ट भाग को छोड़कर अन्य किसी आज तक प्रकाशित गृह्यसूत्र में नहीं मिलता। प्रतीत होता है कि यह बात अनुभव कर उन्होंने इस संस्कार को प्रमुखता नहीं दी थी। यह भी सम्भव है कि इस संस्कार का वर्णन उन्होंने अपने व्याख्यान में किया हो और इसे 'चूड़ाकर्म-संस्कार' के अन्तर्गत कहा हो, परन्तु नोट करने वाले महाशय ने यह नोट न किया हो। यह भी सम्भव है कि नोट करके भी 'उपदेश मंजरी' में प्रकाशित न किया हो। क्योंकि उसमें व्याख्यानों को संक्षेप रूप में दिया है, विस्तार रूप से नहीं।

कैसे भी हो, यह बात तो सिद्ध ही है कि उस समय में स्वामी जी इस संस्कार को नहीं मानते थे।

इन पूना व्याख्यानों के तीन माह बाद अक्टूबर, 1875 में जब स्वामी जी ने संस्कार विधि का प्रथम संस्करण निकाला तो देश में प्राय: सर्वत्र 'कर्णवेध' का प्रचार देख, शास्त्रानुकूल होने से उन्होंने संस्कारमाला में इसे भी स्वीकार किया।

वानप्रस्थाश्रम का भी संन्यासाश्रम में बहुत भेद न जानकर आचार्य दयानन्द ने प्रथम संस्करण में इसे संन्यास के अन्तर्गत माना और गृहाश्रम को मुख्य समझा। परन्तु 1940 वि. सं. (1883 ई.) में जब 8 वर्ष पीछे ऋषि ने 'संस्कार विधि' का द्वितीय संस्करण निकाला, तो उसमें 'कर्णवेध' और 'वानप्रस्थाश्रम' को गृहाश्रम की अपेक्षा अधिक उपयोगी जान भिन्न-भिन्न लिखा।

संस्कार तो स्वामी जी को छोटे-बड़े सदा ही अभिमत थे, किन्तु उनकी मुख्यता और गौणता वे देशानुकूल करते थे। पहिले 1875 ई. के जुलाई मास में कर्णवेध को साधारण जानते थे। अनेक देशों में भ्रमण करते-करते आर्य जाति के प्रत्येक प्रान्तीय द्विजों की रीतियों का पूर्णरूप से अनुभव प्राप्त करके आठ वर्ष पीछे 1940 वि. सं. में जब उन्होंने संस्कार विधि का द्वितीय संस्करण प्रकाशित किया तो 'कर्णवेध' और 'वानप्रस्थ' को बहुपयोगी जान उन्हें गृहाश्रम की अपेक्षा विशेषता दी। 'संस्कार विधि' के प्रथम संस्करण में वर्णित गृहाश्रम को द्वितीय संस्करण में विवाह संस्कार के अन्तर्गत किया और संन्यासान्तर्गत वानप्रस्थ को भिन्न लिखा।

संस्कार विधि के द्वितीय संस्करण में जो न्यूनता वा अधिकता हुई है, उसके लिए स्वामी जी महाराज के ही लेख को उद्धृत करते हैं, जो उन्होंने द्वितीय संस्करण की भूमिका में दिया है –

''जो विषय प्रथम अधिक लिखा था उसमें अत्यन्त उपयोगी न जानकर छोड़ भी दिया है। और अब की बार जो-जो अत्यन्त उपयोगी विषय हैं, वह-वह अधिक भी लिखा है। इसमें यह न समझ जावें कि प्रथम युक्त न था, और प्रथम युक्त छूट गया, उसका संशोधन किया है।''

स्वामी जी के इन वाक्यों से स्पष्ट प्रतीत होता है कि उन्होंने युक्त विषय को छोड़ा नहीं, प्रत्युत द्वितीय संस्करण में संशोधन किया है। ऐसे ही यदि उन्होंने गृहाश्रम को विवाहान्तर्गत और

शेष पृष्ठ 6 पर

डॉ. सुमन जी शारदा का 75वाँ जन्मदिवस समारोह पूर्वक मनाया गया

समाज में एक आदर्श प्रस्तुत किया है डॉ. सुमन शारदा जी ने

– स्वामी आर्यवेश

लुधियाना : 22 जुलाई, 2015 । आर्य समाज की प्रतिष्ठित नेत्री, लुधियाना के प्रसिद्ध सुमन हॉस्पिटल की संचालिका व कन्या गुरुकुल शास्त्री नगर लुधियाना की अधिष्ठात्री डॉ. सुमन जी का 75वाँ जन्मदिवस 22 जुलाई, 2015 को उनके निवास स्थान लुधियाना में यज्ञ करके मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य रूप से दिल्ली से आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी भी पहुँचे। स्वामी आर्यवेश जी के सान्निध्य में आर्य समाज, मॉडल टाऊन के पुरोहित राजेन्द्र शास्त्री ने यज्ञ की प्रक्रिया को पूर्ण करवाया। सर्वप्रथम माता डॉ. सुमन शारदा जी को जन्मदिवस की शुभकामनाएँ दी तथा कहा कि डॉ. सुमन वर्तमान समाज के लिए एक आदर्श हैं। उनको जिस प्रकार की पारिवारिक पृष्ठभूमि मिली उसका गहरा असर उनके जीवन पर दिखाई पड़ता है। जब लड़कियों को समाज में दोयम दर्जे का माना जाता था उस समय आपके माता-पिता ने आपको खुब पढ़ाया व डॉक्टर बनाया तथा उच्च आदर्शों की भावना आप में भरी। आपने भी कभी अपने माता-पिता को बेटों की कमी नहीं होने दी। आपके पास भी सिर्फ चार बेटियाँ हैं उनको आपने कभी किसी प्रकार की कमी नहीं आने दी तथा चारों को बहुत योग्य बनाया। जिनमें से तीन तो स्वयं डॉक्टर हैं। आप वास्तव में आर्य समाज द्वारा चलाये जा रहे बेटी बचाओ अभियान के लिए भी आदर्श हैं। आपका पूरा सामाजिक जीवन अनुकरणीय व सार्थक है। मैं आपको सौ वर्ष तक स्वस्थ एवं कर्म करते हुए जीने की शुभकामनाएँ देता हूँ।

स्वामी जी ने इस अवसर पर कर्मफल व यज्ञ का जीवन में महत्त्व विषय पर भी सारगर्भित विचार रखे। श्रीमती नीलम डाबर ने गीत प्रस्तुत किये। इस अवसर पर सैकड़ों प्रतिष्ठित व गणमान्य नागरिकों ने माता जी को शुभकामनाएँ भी दी जिनमें मुख्य रूप से श्री सत्यानन्द मुंजाल जी के छोटे भाई श्री सुरेश मुंजाल, माता चचंल गुप्ता, श्रीमती नीलम थापर व अरूण थापर, श्री पदम ओल, श्री अतुल मेहता, जगजीत बक्शी, श्रीमती स्वराज मेहता, श्रीमती उषा कालड़ा, अरूण, श्रीमती शारदा अग्रवाल, श्रीमती दर्शना बंसल आदि रहे। माता जी की चारों बेटियाँ व दामाद भी उपस्थित रहे जिनमें डॉ. वाणी थापर व नीरज थापर, डॉ. पिंटू मोदगिल व अमित मोदगिल, डॉ. जैन्नी जीरन व डॉ. रमन जीरन, श्रेया सिंघल व श्री शेखर सिंघल ने शुभकामनाएं दी। श्रीमती राखी ने यज्ञ की अधिकांश व्यवस्था संभाली।

(डॉ. सुमन शारदा जी का संक्षिप्त जीवनवृत्त अगले पृष्ठ पर देखें)

समाज के लिए आदर्श प्रस्तुत करें सभी छात्राएँ

कन्या गुरुकुल लुधियाना में स्वामी आर्यवेश जी का प्रेरणास्पद उद्बोधन

लुधियाना : 21 जुलाई, 2015 । समाज के लिए छात्राएं आदर्श प्रस्तुत करें। यह वाक्य आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने पंजाब के लुधियाना में स्थित कन्या गुरुकुल में छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहे। 21 जुलाई को स्वामी आर्यवेश जी कन्या गुरुकुल में पहुंचे। उन्होंने सभी छात्राओं को आह्वान किया कि आप सभी को आर्ष पाठ विधि के साथ-साथ वर्तमान शिक्षा प्राप्त करके समाज में जो प्रतियोगिता आज चल रही है उसके मायने बदलने हैं तथा अपने आपको अव्वल लाकर वर्तमान समाज के लिए एक आदर्श बनना है। स्वामी जी ने कहा कि अपने जीवन का लक्ष्य अवश्य निर्धारित कर लें। उसमें सबसे महत्त्वपूर्ण बात को जरूर याद रखें। भले ही आप एक डॉक्टर बनने का या इंजीनियर बनने या राजनैतिक व सामाजिक जीवन में जाने का लक्ष्य निर्धारित करें परन्तु सबसे पहले एक अच्छा मनुष्य बनने का संकल्प अवश्य धारण करें क्योंकि एक अच्छा मनुष्य ही अच्छा डॉक्टर या अच्छा वकील बन सकता है।

स्वामी जी ने मुक्त कण्ठ से सभी छात्राओं तथा प्रशिक्षिकाओं की मेहनत की प्रशंसा की वहां का अनुशासन एवं सस्वर वेद पाठ आकर्षक व अनुकरणीय था। इस अवसर पर प्राचार्य श्री बी. आर. मेहता, अतुल मेहता, डॉ. सुमन, माता चंचल गुप्ता, आचार्य सन्तराम आर्य, विजेन्द्र मोहन भण्डारी आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

प्रसिद्ध आर्यनेता एवं उद्योगपति श्री सत्यानन्द मुंजाल जी के स्वास्थ्य के बारे में बात-चीत करते हुए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी

पृष्ठ–4 का शेष

संस्कारों के सन्दर्भ में ऋषि दयानन्द

वानप्रस्थ को संन्यासान्तर्गत न मानकर, प्रत्युत उसे स्वतंत्र मानकर द्वितीय संस्करण में यह संशोधन किया तो कोई दोष की बात नहीं।

मनु महाराज यदि पुंसवन, सीमन्तोन्नयन और कर्णवेध संस्कारों का वर्णन स्व मनुस्मृति में नहीं करते तो इसमें मनु महर्षि का अपमान नहीं किन्तु उन्होंने अपने विचारानुकूल विशेषता नहीं दी और उधर अन्य गृह्यसूत्र कर्ता ऋषि इन्हें सर्वत्र ही स्व-सूत्र ग्रन्थों में विशेषता देते हैं। वे वानप्रस्थ और संन्यास संस्कार का वर्णन नहीं करते। आश्वलायन के अतिरिक्त अन्य ग्रह्यसूत्रकर्ता ऋषियों ने अन्त्येष्टि संकार का वर्णन नहीं किया है इससे हम ये नहीं कह सकते हैं कि इसमें ग्रह्यसूत्रकर्ताओं की त्रुटि हैं इसका समन्वय यही है कि उन महापुरुषों ने अपने-अपने समय में देश कालानुकूल वेदमूल को लेकर संस्कारों का विधान किया। जैसे प्राचीन काल में ऋषियों ने विधियाँ लिखीं, वैसे ही उन्नीसवीं शताब्दी के सबसे बड़े धर्मसंशोधक वेदत्त्वज्ञाता स्वामी दयानन्द ने भी देश कालानुकूल जिस-जिस संस्कार की बहुत विशेषता अनुभव की उसे मुख्य और अन्य साधारण संस्कारों को गौण समझकर उन्हें मुख्य संस्कारों के अन्तर्गत किया।

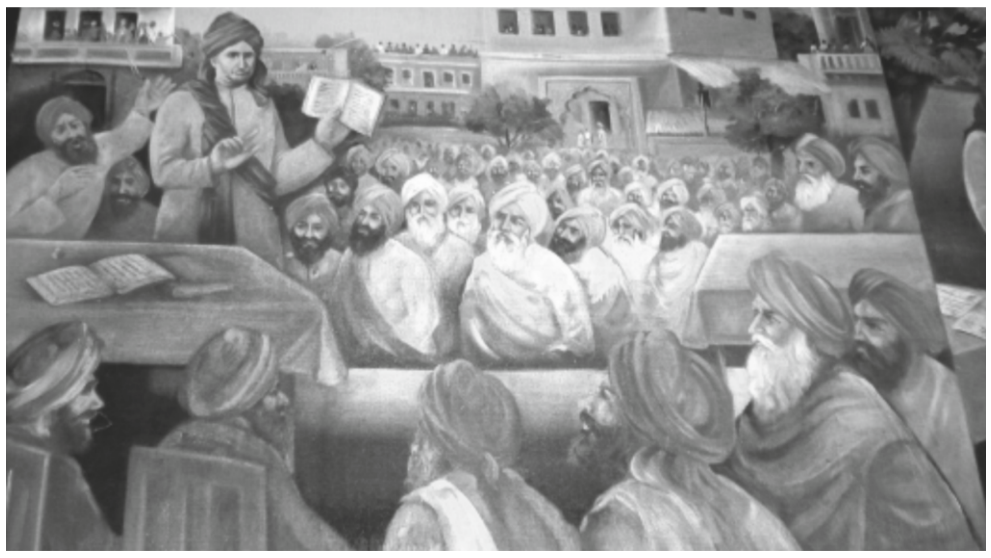

इस प्रकार स्वामी दयानन्द सरस्वती की रचनाओं में 'संस्कार-विधि' का प्रमुख स्थान ह। उनके महत्त्वपूर्ण तीन ग्रन्थ 1. संस्कार विधि, 2. सत्यार्थ प्रकाश, 3. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका हैं।

प्राचीन ऋषियों ने मनुष्य जन्म को सुसंस्कृत बनाने के लिए बहुविध संस्कारों की योजना की है। मनुस्मृति में गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त चौदह संस्कारां का उल्लेख है। अन्य गृह्यसूत्रों में भी अनेकविध संस्कारों का वर्णन मिलता है। संक्षेप में उन गृह्यसूत्रों के अनुसार संस्कारों की संख्या इस प्रकार है :-

आश्वलायन गृह्यसूत्र	13 तरह
कौषीतकि (शांखायन) गृह्यसूत्र	12 बारह
पारस्कर गृह्यसूत्र	14 चौदह
आपस्तम्ब गृह्यसूत्र	12 बारह
हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र	10 दस
मानव गृह्यसूत्र	13 तेरह
गोभिल गृह्यसूत्र	12 बारह
जैमिनि गृह्यसूत्र	11 ग्यारह
कौशिक गृह्यसूत्र	10 दस
गोपथ ब्राह्मण	11 ग्यारह
मनुस्मृति	14 चौदह

किसी गृह्यसूत्रकार ने वानप्रस्थ तथा संन्यास का उल्लेख नहीं किया। इसका कारण यह है कि ये गृह्यसूत्र गृहस्थ सम्बन्धी कर्त्तव्यों का वर्णन करते हैं अन्यों का नहीं। वानप्रस्थ और संन्यास का गृह कर्मों से कोई सम्बन्ध नहीं, अत: इनका विधान गृह्यसूत्रों में नहीं मिलता। इन दोनों संस्कारों का विशेष वर्णन ब्राह्मण और स्मृतियों में आता है, और स्वामी जी ने यह संस्कार उन्हीं के आश्रय से लिखे हैं। आश्वलायन और कौशिक गृह्यसूत्र के अतिरिक्त किसी गृह्यसूत्र में अन्त्येष्टि का वर्णन नहीं है, किन्तु यजुर्वेद तथा मनुस्मृति में अन्त्येष्टि संस्कार का वर्णन है। स्वामी दयानन्द की मान्यताओं में वेद तथा मनुस्मृति प्रतिपादित सिद्धान्तों का प्राधान्य है। अत: स्वामी जी ने अपनी 'संस्कार-विधि' में सोलहवें संस्कार के रूप में अन्त्येष्टि संस्कार का वर्णन किया है। आश्वलायन गृह्यसूत्र तथा कौषीतकि में -

1. निष्क्रमण, 2. कर्णवेध, 3. वानप्रस्थ तथा 4. संन्यास का उल्लेख नहीं है। इसी प्रकार गृह्यसूत्र में 'गर्भरक्षण' नाम का संस्कार अधिक लिखा है। जिसे पुंसवन के बाद चतुर्थ मास में कराने का विधान हैं इस गृह्यसूत्र के अतिरिक्त किसी अन्य गृह्यसूत्र में यह संस्कार नहीं मिलता। पारस्कर गृह्यसूत्र में वानप्रस्थ संन्यास और अन्त्येष्टि का वर्णन नहीं है। इसी प्रकार उपरिलिखित गृह्यसूत्रों में किसी में 12 बारह, किसी में 10 दस, किसी में 13 तेरह, 14 चौदह संस्कारों का उल्लेख मिलता है। अधिक से अधिक 48 संस्कारों का उल्लेख भी कुछ गृह्यसूत्रों तथा निबन्धों में है। परन्तु स्वामी जी मुख्य रूप से 16 सोलह संस्कारों का उल्लेख उसकी उपयोगिता और उसकी विस्तृत विधि का वर्णन संस्कार विधि में करते हैं। स्वामी जी द्वारा अभिमत 16 संस्कार निम्न हैं -

1. गर्भाधान, 2. पुंसवन, 3. सीमन्तोन्नयन, 4. जातकर्म, 5. नामकरण, 6. निष्क्रमण, 7. अन्नप्राशन, 8. चूड़ाकर्म, 9. कर्णवेध, 10. उपनयन, 11. वेदारम्भ, 12. समावर्तन, 13. विवाह, 14. वानप्रस्थ, 15. संन्यास, 16. अन्त्येष्टि।

ऋषि दयानन्द ने विभिन्न गृह्यसूत्रों तथा मनुस्मृति के आधार पर अत्यन्त उपयोगी 16 (सोलह) संस्कारों के क्रियाकलाप का वर्णन अपने 'संस्कार विधि' संज्ञक ग्रन्थ में किया है। संस्कार विधि की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं :-

1. चारों वेदों में मंत्रों, ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यक, उपनिषद्, गृह्यसूत्र तथा मनुस्मृति के प्रमाणों से संकलित हैं गृह्यसूत्रों के अतिरिक्त वेद तथा मनुस्मृति के प्रमाण अधिक संख्या में दिए गए हैं।

2. प्रत्येक गृह्यसूत्र किसी न किसी वेद से सम्बद्ध है। स्वामी जी ने चारों वेदों से सम्बद्ध मुख्य गृह्यसूत्रों का उपयोग 'संस्कार विधि' में किया है, इससे 'संस्कार विधि' संस्कारों का एक समग्र ग्रन्थ के रूप में प्रसिद्ध हो गया। स्वामी जी ने चारों वेदों से सम्बद्ध जिन गृह्यसूत्रों का उपयोग 'संस्कार विधि' में किए हैं उसका उल्लेख इस प्रकार है -

1. ऋग्वेद का आश्वलायन गृह्यसूत्र, 2. यजुर्वेद का पारस्कर गृह्यसूत्र, 3. सामवेद का गोभिल गृह्यसूत्र तथा मन्त्रब्राह्मण एवं 4. अथर्ववेद का शौनक गृह्यसूत्र।

इसका परिणाम यह हुआ कि चारों वेदों के गृह्यसूत्रों के अनुसार संस्कार करने-कराने वालों के लिए यह एक उपयोगी ग्रन्थ बन गया।

3. संस्कारों की कतिपय विधियों में मांसभक्षण का विधान गृह्यसूत्रों में मिलता हैं विशेषकर मधुपर्क के निर्माण में तथा अन्नप्राशन में। किन्तु स्वामी दयानन्द ने स्वरचित 'संस्कार विधि' में मांस, मछली तथा सुरा को कहीं किसी रूप में स्थान नहीं दिया।

4. गृह्यसूत्रों में संस्कार का पात्र मुख्यत: ब्राह्मण या द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य को माना गया है। स्वामी जी संस्कारों का पात्र मानव मात्र को मानते हैं। संस्कार श्रद्धा और भक्ति पूर्वक कोई कर सकता है। स्वामी जी के अनुसार संस्कारों को करने वाला द्विज है और द्विजत्व का निर्धारण गुण, कर्म तथा स्वभाव के आधार पर शूद्र कुलोत्पन्न बालक को संस्कार के अयोग्य नहीं माना जा सकता।

5. गृह्यसूत्रों में स्त्री या नारी वर्ग के प्रति अत्यन्त ही भेदभाव मिलता है। मनुस्मृति और अनेक गृह्यसूत्र अनेक संस्कारों के लिए स्त्री को अधिकारी ही नहीं मानते हैं। संस्कारों की अनेक विधियाँ स्त्रियों के लिए विहित नहीं हैं या उन विधानों को स्त्री (बालिका) के संदर्भ में मन्त्रपाठरहित मौन होकर सम्पन्न करना है। स्वामी जी ने इस प्रकार के भेदभाव की कड़ी समीक्षा की है और स्त्री-पुरुष दोनों के लिए समान रूप से सभी विधियों का विधान किया है।

डॉ. सुमन शारदा जी का संक्षिप्त जीवन वृत्त

प्रत्येक देश, काल व युग में यदा-कदा ऐसे व्यक्तित्व पैदा होते हैं जो न केवल देश व समाज के प्रति कर्त्तव्यों का निष्ठा पूर्वक निर्वाह करते हैं बल्कि अपने सद्कृत्यों से समाज को गौरवान्वित भी करते हैं। ऐसा ही व्यक्तित्व हैं डॉ. श्रीमती सुमन जी शारदा। इनका जन्म लाहौर (पाकिस्तान) में धार्मिक दम्पत्ति पिता श्री निरंजन नाथ एवं माता श्रीमती वेद कुमारी के घर 22 जुलाई, 1940 को हुआ। इनकी आरम्भिक शिक्षा आर्य स्कूल लुधियाना, उच्च शिक्षा सरकारी कॉलेज लुधियाना एवं डॉक्टरी की शिक्षा सरकारी मेडिकल कॉलेज, अमृतसर में हुई। इन्होंने अपना कार्यकाल बतौर गाइनाकॉलोजिस्ट की नौकरी कृष्णा चैरीटेबल अस्पताल से प्रारम्भ की। आज भी ये इसी अस्पताल में पिछले 17 सालों से नि:शुल्क सेवाएं प्रदान करती आ रही हैं। इसके बाद अपने गृह स्थान पर खुद का अस्पताल खोला। मॉडल टाऊन, लुधियाना में इनका एक अत्याधुनिक सुविधाओं वाला अस्पताल सुमन अस्पताल के नाम से है। इनके परिवार के सभी सदस्य इसमें अलग-अलग विभाग को चला रहे हैं। ये एक जाना माना अस्पताल है।

अपने व्यवसाय के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में ये अपना अहम योगदान दे रही हैं। ये बहुत सी सामाजिक, शैक्षिक एवं धार्मिक संस्थाओं से जुड़ी हुई हैं। ये स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन की प्रधाना, आर्य गुरुकुल शास्त्री नगर लुधियाना की अधिष्ठात्री, आर्य समाज मॉडल टाऊन, आर. एस. मॉडल स्कूल, बी. सी. एम. सी. सै. स्कूल, शास्त्री नगर लुधियाना, ज्ञान स्थल मंदिर की कमेटी, वृद्ध आश्रम तथा भारत विकास परिषद् एवं एक प्रयास स्कूल की कार्यकारिणियों की मुख्य सदस्या हैं। नोबल फाऊण्डेशन लुधियाना की मुख्य संरक्षिका है। स्त्री अमार्य समाज मॉडल टाऊन में इनका नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है। यह स्त्री आर्य समाज की रीढ़ की हड्डी हैं, हमारी प्रेरणा स्त्रोत हैं। समाज सेवा हेतु किए गए सभी कार्यों से सभी संतुष्ट हैं। जिन संस्कारों को लेकर वे उन्नति के पथ पर बढ़ीं वह उनके माता-पिता की देन है। डॉ. सुमन जी दानी, नेक दिल, प्रभु-भक्त, कर्मठ, अच्छी संचालिका, मधुरभाषी, सहनशील, संवेदनशील, अच्छी वक्ता व भजनोपदेशिका हैं। डॉ. सुमन शारदा के बारे में जितना लिखा जाए उतना ही कम है।

आर्ष ग्रन्थों के ज्ञान की पिपासा इनमें हमेशा ही बनी रहती है। स्वामी विवेकानन्द जी रोजड़ वाले हर तीसरे मास वैदिक ज्ञान के उत्थान के लिए इनके गृह स्थान पर पधारते हैं व आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन करवाते हैं। वैदिक आश्रमों में जाकर वे शिविरों में योग पद्धति एवं ध्यान की विधि के बारे में गहन जानकारी प्राप्त करती हैं। स्थानीय स्तर पर भी ऐसे शिविरों की व्यवस्था में सहयोग देती हैं। समय-समय पर फ्री मेडिकल कैम्प लगवाती हैं जिससे काफी संख्या में लोग लाभ उठाते हैं। वे समय-समय पर लंगर लगवाती रहती हैं और इस कार्य के लिए दूसरों को भी प्रेरित करती हैं। वह स्कूली छात्राओं की शिक्षा एवं पर्यावरण की सुरक्षा के लिए भी कार्य कर रही हैं। सामाजिक कुरीतियों को जड़ से खत्म करने के लिए सदैव कार्यरत रहती हैं। वह निम्न वर्ग के लड़के-लड़कियों को व्यावसायिक कोर्स जैसे कम्प्यूटर, ड्रेस मेकिंग, ब्यूटीशियन, ड्राइविंग, मैकेनिक, इलैक्ट्रीशियन, लैब टैक्नीशियन के लिए वित्तीय सहायता भी देती हैं ताकि वे आत्म निर्भर बन सकें।

डॉ. सुमन जी ने घर और बाहर दोनों जिम्मेदारियों को अकेले ही उठाया। जब शादी हुई तब ससुराल परिवार काफी बड़ा था। ये परिवार की सबसे बड़ी बहू थीं। घर की जिम्मेदारी एवं अपनी प्रैक्टिस को बखूबी निभाया। पति सर्जन डॉ. विनीत जी शारदा की एम. एस. की पढ़ाई पूरी करवाने में भी डॉ. सुमन जी का विशेष योगदान रहा। उन्नति के पथ पर हमेशा आगे बढ़ती गई और फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

यह एक ममतामयी माँ हैं। ये कहती हैं कि बेटियाँ परिवार की शान होती हैं। इन पर हर अभिभावक को नाज करना चाहिए। इनकी चार बेटियाँ हैं, चारों शिक्षा-दीक्षा व संस्कारों से परिपूर्ण हैं। तीन बेटियाँ डॉ. वाणी, डॉ. विदु, डॉ. जैनी गाइनी विशेषज्ञ हैं तो एक बेटी श्रेया आर्कीटैक्ट हैं। इन्होंने अपनी चारों बेटियों को पढ़ा-लिखा कर योग्य बनाया है कि आज समाज में इनका विशेष नाम है। प्रोफेशन और सामाजिक कार्यों में भी वे अपनी जिम्मेदारियों को निभा रही है। उन्होंने बेटियों को ही अपने कुल की शान माना है। उन्हें अपनी चारों बेटियों पर नाज है। इनका संदेश है कि खुद में विश्वास और सकारात्मक सोच को बढ़ावा देना चाहिए। काम चाहे कितना भी मुश्किल क्यों न हो आत्मविश्वास से हर मुश्किल को जीता जा सकता है। बच्चों को अच्छे नागरिक बनाने के लिए उन्हें सुसंस्कृत करें।

डॉ. सुमन जी के जन्म दिवस पर स्त्री आर्य समाज, आर्य समाज मॉडल टाऊन, लुधियाना के सभी सदस्य इन्हें शुभकामनाएँ प्रदान करते हुए हर तरह के सहयोग का आश्वासन देते हैं तथा ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि परमपिता परमात्मा इन्हें अच्छा स्वास्थ्य एवं दीर्घायु दें व आप समाज की सेवा में सदा प्रयासरत रहें।

वैदिक सार्वदेशिक के सदस्यों से निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका के उन ग्राहकों से विनम्र निवेदन है जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है। वे शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क 250/- रुपये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करें, अन्यथा भविष्य में उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेज पाना सम्भव नहीं हो सकेगा, और उनका नाम ग्राहक सूची से हटा दिया जायेगा। वैदिक सार्वदेशिक का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2500/- रुपये है। जो महानुभाव इस पत्रिका को मंगाना चाहें वह उपरोक्त राशि चैक/ड्राफ्ट अथवा धनादेश द्वारा ''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'' के नाम से सभा कार्यालय ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर भेजें। देश-विदेश में हजारों की संख्या में भेजे जाने वाले वैदिक सार्वदेशिक को प्रति सप्ताह अपने घर पर प्राप्त करने के लिए शीघ्र सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, वैदिक सार्वदेशिक

आर्य समाज की गतिविधियाँ

यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं आर्य समाज की स्थापना

डॉ. जय सिंह सरोज सेवा निवृत्त राजपत्रित अधिकारी एवं पूर्व उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र. ने अपने पैत्रिक गाँव भोजपुर (नऊअरी) जनपद-अलीगढ़ के स्व. श्यामा देवी धर्म सिंह धाम में दिनांक 3 से 5 जुलाई, 2015 में यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया तथा अन्तिम दिन पूर्ण आहुति के पश्चात् संस्थापक/संरक्षक के रूप में आर्य समाज एवं वीरांगना रानी अवन्तीबाई धाम की स्थापना की। यज्ञ के ब्रह्मा संत शिरोमणि त्याग मूर्ति स्वामी अमृतानन्द सरस्वती थे। इस कार्यक्रम में भजन एवं उपदेश हुए जिसमें आर्य जगत के उद्भट्ट विद्वान डॉ. जीवन सिंह प्राचार्य स्वामी सर्वदानन्द गुरुकुल साधु आश्रम अलीगढ़ वैदिक प्रवक्ता क्षेत्रपाल सिंह आर्य, रघुराज सिंह आर्य, ओम प्रकाश शास्त्री, तेजपाल सिंह आर्य आदि थे। वेद पाठी ब्र. सत्येन्द्र शास्त्री एवं ब्र. कपिल शर्मा गुरुकुल साधु आश्रम थे। अनेकों गांव की मातृ शक्ति एवं धर्म प्रेमी बन्धुओं ने आहुति देकर तथा उपदेश सुनकर ब्रह्म लाभ उठाया। आर्य समाज के गठन में सर्वसम्मति से डॉ. जय सिंह सरोज संस्थापक/संरक्षक, बहोरी सिंह आर्य प्रधान, सुरेशचन्द्र आर्य मंत्री, चन्द्रभान सिंह आर्य कोषाध्यक्ष, मुकेश वर्मा एडवोकेट लेखा सम्परीक्षक एवं 08 अन्य कार्यकारिणी के सदस्य चयनित हुए।

- डॉ. जयसिंह सरोज, संरक्षक, आर्य समाज काशीपुर, उधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

मानव कल्याण हेतु शान्ति यज्ञ सम्पन्न यज्ञ तथा परोपकारी कार्यों से ही सुखद मृत्यु - 'यश'

जयपुर : 22 जुलाई यज्ञ जैसे परोपकारी कार्यों से बिना कष्ट सुखद मृत्यु मिलती है। थडी मार्केट मानसरोवर में ललिता प्रसाद तिवारी के यहां मानव कल्याणार्थ शान्ति यज्ञ कराते हुए सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् प्रदेशाध्यक्ष यशपाल 'यश' ने उक्त कथन कहा।

'यश' ने कहा कि महामृत्युंजय मंत्र में खरबूजे की उपमा बताई गई है उसकी तरह जीवन परिपक्व सरस, एकरस जिसके वासनाओं के बीज इकट्ठे होकर जरा सी योग साधना रूपी चाकू से बिना कट निकल जाता है। खरबूजा जैसे पककर डाल से स्वयं अलग होता है उसी प्रकार मनुष्य भी मुक्ति सहज प्राप्त कर सकता है।

विवेक तिवारी यज्ञमान रहे, रमेश धीक ने यज्ञ व्यवस्थाओं में सहयोग किया परिषद् का मानव कल्याण एवं विश्व शान्ति यज्ञ अभियान जारी है।

Right to live

- B. R. Sharma Vibhakar

Everybody, who takes birth as a man, has got the right to live. But this conditional sentence infills a great meaning to have the right to live. Life is very precious, never to waste meaninglessly, never to live so cheaply. One who considers his aim of life, is really a reflective person. His chaste national feelings, his all actions (deeds) to certifiy his identity for the leetterment of the society. If the society rejects his low feelings against the manly terms, that person would be called sordid. The good and cultured circle of the society will never accept him and he would be looked down upon the meaning thereby he revolts meaninglessly. His meaningless birth on the earth is just an undesirable weight. His life is useless, aimless and without any humanly quality. He would be rejected by the society. He would be never welcomed as a good citizen to blossom into a flower of scent and grace. So we should think over the man's actions and deeds to live a life of lofty feelings, never to disturb the global humanity. Let us chant this vedic mantra-

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मंनासि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्व संजानाना उपासते॥

This contains a universal appeal. That is the peak of our vedic culure. We live and let live others to live a life of dignity. Because of no suitable fooding, drinking, sleeping and thinking many heinous crimes are taking place and as a result of this style of living inhuman atmosphere is being created.

निःशुल्क चिकित्सा एवं जांच शिविर में 300 रोगियों की जांच की गई

अलवर : 12 जुलाई, आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग के तत्वावधान में जनसहयोग से 68वाँ निःशुल्क चिकित्सा एवं जांच शिविर आज स्वतंत्रता सेनानी श्री छोटूसिंह आर्य धर्मार्थ हास्पीटल में लगाया गया।

इसमें 300 रोगियों की जांच की गई। अमर मुनि ने यज्ञ के महत्त्व को बताते हुए आर्यजनों को यज्ञ दैनिक जीवन में अपनाने एवं पर्यावरण शुद्धि हेतु निरन्तर प्रयत्न करने के लिए प्रेरित किया। निरंजन लाला डाटा ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला तथा पं. हेतराम आर्य सभागार में बन रही आर्ट गैलेरी हेतु 1 लाख रुपये तथा श्रीमती सुरभि चन्द्रा पत्नी सचिन चन्द्रा ने 51,000 रुपये दान दिये। शिविर के मुख्य अतिथि निरंजन डाटा ने रिबिन काटकर शिविर का उद्घाटन किया।

शिविर में लगभग 100 रोगियों ने मधुमेह एवं एचबी की निःशुल्क तथा 20 रोगियों ने यूरिन कैम्पलीट, 20 रोगियों ने थॉयराईड, 15 रोगियों ने लिपिडप्रोफाइल फंक्शन, 10 रोगियों ने लिवर फंक्शन, 10 ने ईसीजी, 15 ने पीएसए, 10 ने एचबी 1 सी, 10 ने ईसीओ, 10 ने एक्स-रे डिजिटल, 30 रोगियों ने टीएसएच आदि की रियायती दरों पर जांच करवाई। रोगियों को आवश्यकतानुसार निःशुल्क दवाईयाँ दी गई।

- प्रदीप आर्य, श्री छोटू सिंह आर्य, धमार्थ हॉस्पिटल, अलवर

आर्य समाज मंदिर नागदा में सुखद वर्षा हेतु वर्षेष्टि यज्ञाहूतियाँ दी

नागदा : पार्षद विजय पटेल ने बताया कि आर्य समाज मंदिर में साप्ताहिक सत्संग के अन्तर्गत होने वाले यज्ञ में धर्माचार्य डॉ. पं. लक्ष्मीनारायण सत्यार्थी के आचार्यत्व में आज अच्छी पर्याप्त वर्षा हेतु वर्षेष्टि मंत्रों से 151 यज्ञाहूतियाँ बड़ी संख्या में उपस्थित आर्यजनों द्वारा दी गई। पश्चात् साप्ताहिक सत्संग में सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास का पाठ किया गया।

आगे जानकारी देते हुए विजय पटेल ने बताया कि डॉ. सत्यार्थी ने ईश्वर भक्ति के नव अंगों पर प्रकाश डालते हुए श्रवण, कीर्तन, वंदन, अर्चन पर गूढ़ ज्ञानमयी व्याख्या दी। वहीं मनुष्यों के बिगड़ती दिनचर्या पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि आज मानव क्रोधी, लंपट, कामी, जो बनता जा रहा है उसका एक कारण ठीक समय पर नहीं जगना, शयन व स्नान आदि नहीं करना है। साथ ही अधिक मास में कमला एकादशी की जानकारी के साथ उपदेश की पूर्णाहुति हुई।

कार्यक्रम का संचालन मंत्री कमल आर्य ने किया। इस अवसर पर दिनेश आंजना, यशवंत आर्य, रामसिंह पटेल, मनोज शर्मा, अग्निवेश पाण्डे, ओम प्रकाश, अविरल आर्य, मानसिंह पटेल, रणछोड़ परमार आदि उपस्थित थे।

- विजय पटेल

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर-घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)
(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है
10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। **डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा।** प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

-: प्रकाशक :-
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

वेदाः
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

धन का सदुपयोग

पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान् द्रीघीयांसमनु पश्येत पन्थाम्।
ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रान्यमन्यमुप तिष्ठन्त रायः।।

—ऋ० १०/११७/५

ऋषिः—आङ्गिरसो भिक्षुः।। देवता—धनान्नदानप्रशंसा।। छन्दः—विराट्त्रिष्टुप्।।

विनय—धन को जाते हुए कितनी देर लगती है? व्यापार में घाटा हो जाता है, चोर–लुटेरे धन लूट ले जाते हैं, बैंक टूट जाते हैं, घर जल जाता है आदि सैकड़ों प्रकार से लक्ष्मी मनुष्य को क्षणभर में छोड़कर चली जाती है। वास्तव में लक्ष्मीदेवी बड़ी चंचल है। वह मनुष्य कितना मूर्ख है जो यह समझता है कि बस, यदि में दूसरों को धन दान नहीं करूंगा तो और किसी प्रकार मेरा धन मुझसे पृथक् नहीं हो सकेगा। अरे, धन तो जब समय आएगा तो एक पलभर में तुझे कंगाल बनाकर कहीं चला जाएगा। इसलिए हे धनी पुरुष! यदि इस समय तेरे शुभकर्मों के भोग से तेरे पास धन–सम्पत्ति आई हुई है तो तू इसे यथोचित–दान में देने में कभी संकोच मत कर। जीवन–मार्ग को तनिक विस्तृत दृष्टि से देख और सत्पात्र को दान देने में अपना कल्याण समझ, अपनी कमाई समझ। सच्चा दान करना, सचमुच जगत्पति भगवान् को उधार देना है जो बड़े भारी दिव्य सूद के साथ फिर वापस मिलता है। जो जितना त्याग करता है वह उससे न जाने कितना गुणा अधिक प्रतिफल पाता है; यह ईश्वरीय नियम है। दान तो संसार का महान् सिद्धान्त है, पर इस इतनी साफ बात को यदि लोग नहीं समझते हैं तो इसका कारण यह है कि वे मार्ग को दूर तक नहीं देखते। जीवन–मार्ग कितना लम्बा है, यह संसार कितना विस्तृत है और इस संसार में जीवों को उनके कब के शुभ–अशुभ कर्मों का फल उन्हें कब मिलता है, यह सब–कुछ नहीं दिखाई देता। इसीलिए हमें संसार में चलते हुए वे अटल नियम भी दिखाई नहीं देते जिनके अनुसार सब मनुष्यों को उनके शुभ–अशुभ कर्मों का फल अवश्यमेव भोगना पड़ता है। यदि इस संसार की गति को हम तनिक भी ध्यान से देखें तो पता लगेगा कि धन–सम्पत्ति इतनी अस्थिर है कि यह रथचक्र की भाँति घूमती फिरती है– आज इसके पास है तो कल दूसरे के पास है, परन्तु हम अति क्षुद्र दृष्टिवाले हैं और इसलिए इस 'आज' में ही इतने ग्रस्त हैं कि हम 'कल' को देखते हुए भी नहीं देखते हैं। संसार में लोगों को नित्य धननाश होता हुआ देखते हुए भी अपने धननाश के एक पल पहले तक भी हम इस घटना के लिए कभी तैयार नहीं होते और इसीलिए तनिक–सा धननाश होने पर इतने रोते–चीखते भी हैं। यदि हम मार्ग को विस्तृत दृष्टि से देखें तो इन धनागमों और धननाशों को अत्यन्त तुच्छ बात समझें। यदि संसार में प्रतिक्षण चलायमान, घूमते हुए, इस धन–चक्र को देखें, इस बहते हुए धनप्रवाह को देखें, तो हमें धन जमा करने का तनिक भी मोह न रहे।

शब्दार्थ—**तव्यान्**=धन से बढ़े हुए समृद्ध पुरुष को चाहिए कि वह **नाधमानाय**=माँगने वाले सत्पात्र को **पृणीयात् इत्**=दान देवे ही; **पन्थाम्**=सुकृत मार्ग को **द्राघीयांसम्**=दीर्घतम **अनुपश्येत**=देखे। इस लम्बे मार्ग में **रायः**=धन सम्पत्तियाँ **उ हि**=निश्चय से **रथ्याः चक्राः इव**=रथ–चक्रों की भाँति **आ वर्तन्ते**=ऊपर–नीचे घूमती रहती हैं बदलती रहती हैं और **अन्यं अन्यं उपतिष्ठन्ते**=एक को छोड़कर दूसरे के पास जाती रहती है।

साभार-'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

An Humble Tribute "To A. P. J. Kalam"

A. P. J. Kalam, speaking his mind
So clear and cut,
So open and unshut,
That he is wholly given up
To the country's sake
Let your progress go
Unstopped without brake.
O! The Missile man!
You, you who invented great,
Brought about all
What is in favour of our motherland,
Not oppressive and opponent,
But a global friend.
He says: 'Our culture is grand'.
One should be his country's fan,
As country is greater than man.
Above, above the religion and caste,
It is the Human Conduct so chaste and vast.
You wore the vision, the mission and the goal,
The practical way of life you played a role,
You engaged the whole mental energy,
To its proper use for your country alone.
Always a friend of children
A Lover of youth and young alike
To watch the bright Future in their eyes,
Giving a luminous message-'Rise, do, rise,
Studied role to the practical ways,
That's really a format of life's stage.
Today you are not alive
but your whole life 's work
would be remembered for ever,
And you are ambassador
to Indian Culture.
O teacher, o scientist,
O philosopher!
We all are indebted to your
multifacetted
Adventure.

- Poet- B. R. Sharma Vibhakar
52/2 Lal Quarter, Ghaziabad-201001 (U. P.)
Mo. :- 9350451497

("Dr. A.P.J. Kalam, a grand Personality of the world, a grand son of Bharat mata, a Prominent scientist, a poet and above all the good man who rose to Presidentship of India.")

नशे से दूर रहोगे तो जीवन होगा सार्थक
– स्वामी आर्यवेश
मेहता इंजीनियरिंग प्रा. लिमिटेड के लगभग 800 कर्मचारियों एवं कार्यकर्ताओं को किया सम्बोधित

लुधियाना : 22 जुलाई, 2015 । लुधियाना की प्रसिद्ध मेहता इंजीनियरिंग प्रा. लिमिटेड में 22 जुलाई को स्वामी आर्यवेश जी का उद्बोधन बहुत ही प्रेरणादायी रहा जिसमें उन्होंने वहां उपस्थित लगभग 800 कर्मचारियों व कार्यकर्ताओं को नशे से दूर रहने का आह्वान किया। स्वामी जी ने कहा कि आज पूरा पंजाब नशे के आगोश में दिखाई पड़ता है। जो कि एक भयानक स्थिति को प्रकट करता है। स्वामी जी ने सभी कार्यकर्ताओं व कर्मचारियों से आह्वान किया कि आप भी अपने आपको नशे से दूर रखें फिर वो नशा चाहे किसी भी प्रकार का क्यों ना हो। आज एक कर्मचारी पूरे दिन में जो कमाता है वो शाम को किसी ठेकेदार को सौंप देता है और उसका पूरा परिवार भोजन कीआशा में बैठा रहता है और मजबूरन भूखा सोना पड़ता है। उसके बच्चे शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। परिणामस्वरूप उनका विकास नहीं होता और परिवार खुशियों से कोसों दूर चला जाता है। शराब के कारण जहां माँ–बाप कष्ट उठाते हैं वहीं सन्तान भी समाज में तिरस्कार की दृष्टि से देखी जाती है। इसलिए आज ही संकल्प ले लो कि जो गलती अब तक हुई उसको यहीं छोड़ दो तथा अभी से एक नए व नशे–व्यसनों से रहित जीवन का संकल्प लो।

स्वामी जी के प्रवचन से पहले श्री राजेन्द्र शास्त्री जी ने प्रभू भक्ति के गीत प्रस्तुत किए। श्री अतुल मेहता व उनके साथियों ने स्वामी जी का सम्मान भी किया। यहां के बाद स्वामी जी युवा उद्योगपति श्री पद्म ओल की फैक्ट्री में भी पहुँचे जहां पर कुछ विशेष साथियों से बातचीत की।

पाँच दिवसीय युवा निर्माण शिविर का समापन
कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, गौहत्या, धार्मिक अन्धविश्वास एवम् अश्लीलता आदि के विरुद्ध आर्य समाज लोक शक्ति को मजबूत करेगा
– स्वामी आर्यवेश

देश में कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, गौहत्या, धार्मिक अन्धविश्वास एवं अश्लीलता जैसी ज्वलन्त सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध आर्य समाज लोक शक्ति को मजबूत करेगा यह बात आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने सामुदायिक केन्द्र रावलवास में आर्यजनो को संबोधित करते हुये कही। स्वामी आर्यवेश जी ने केंद्र सरकार से मांग की है कि –

(1) शराब व समस्त मादक पदार्थों पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने के लिए केंद्र सरकार राष्ट्रीय नीति घोषित करे तथा पूरे देश में शराब बंदी करे।

(2) कन्या भ्रूण को जन्म लेने से पहले यह पता लगाकर कि माँ की कोख में पल रहा बच्चा लड़का नहीं लड़की है, उसे खत्म करा देना अर्थात् गर्भपात करा देना भारतीय दंड संहिता की धरा 302 के अंतर्गत हत्या एवं कत्ल माना जाए।

(3) टेलीविजन अन्य इलेक्ट्रॉनिक व प्रिंट प्रचार माध्यमों के द्वारा प्रसारित अश्लील व फूहड़ किस्म के कार्यक्रम (फिल्म, सीरियल, भद्दे विज्ञापन) आदि पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाये तथा देशभक्ति, चरित्र, नैतिकता आदि गुणों से ओतप्रोत कार्यक्रम प्रसारित किये जाएँ।

(4) गौहत्या, गौमांस के निर्यात पर प्रान्तों को निर्णय लेने का अधिकार समाप्त किया जाए। राष्ट्रीय नीति बनाई जाए।

(5) दूरदर्शन व अन्य सभी चैनलों पर दिखाए जाने वाले विज्ञानं व वैज्ञानिक सोच के विपरीत पाखण्ड, अन्धविश्वास एवम् अन्य तंत्र–मन्त्र से सम्बंधित कार्यक्रमों व कथित धर्म गुरुओं के प्रवचनों पर रोक लगाई जाये। सभी धार्मिक संस्थानो की गतिविधियों पर निगरानी रखी जाए तथा असामाजिक तत्वों, अवैध हथियारों एवम् अनैतिक गतिविधियों को वहां पर पनपने से रोक जाये। उनकी अकूत सम्पतियों की जाँच की जाये।

गुरुकुल धीरणवास के कुलपति एवं वरिष्ठ आर्य संन्यासी स्वामी सर्वदानन्द जी ने इस अवसर पर कहा कि यदि युवाओं को संस्कारित करना चाहते हो तो उन्हें आर्य समाज से जोड़ो। इस अवसर पर सैंकड़ों आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं ने पूरे गाँव में पैदल यात्रा सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में निकाली। स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त जन चेतना यात्रा में आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, आचार्य संतराम आर्य, सहसरपाल आर्य, सोनू आर्य, महेंद्र आर्य के अतिरिक्त सैकड़ों ग्रामीणों ने भी भाग लिया।

इस शिविर के संयोजक वा आर्य युवक परिषद के उप व्यायाम शिक्षक अनिल आर्य ने बताया कि शिविर में जहाँ पाँच दिन तक योगासन, प्राणायम, जूडो कराटे, लाठी, स्तूप निर्माण आदि का प्रशिक्षण दिया वहीं संध्या व हवन भी सिखाया गया। आज के मुख्य अतिथि रणधीर पनीहार ने युवाओं को देश का आधार बताया। उन्होंने कहा के युवाओं को सही दिशा देने कि जरूरत है। इस अवसर पर आर्य युवक परिषद रावलवास खुर्द का गठन भी किया गया। जिसमे भागीरथ आर्य को प्रधान व रमेश आर्य को महामंत्री बनाया गया। सैंकड़ों महिलाओं ने बुराइयों से बचने का संकल्प लिया। जिला कार्यकारी प्रधान दलबीर आर्य ने बताया कि अगले दिनों में पूरे जिले में युवा निर्माण शिविरों का आयोजन किया जायेगा

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।